निर्दलीय

अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

- साहित्य
- कला
- संस्कृति
- उद्यमिता

प्रधान संपादक- कैलाश आदमी

उप संपादक: सरिता गर्ग 'सरि'
प्रवासी संपादक: डॉ. सुनीता शर्मा

वर्ष: २० | अंक: ०६ | नई दिल्ली, दिसंबर २०२५ | मूल्य: १०/- | विशेषांक: ५०/-

जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण विशेषांक

जल-जंगल-जमीन के उजड़ते गए ठौर।
सम्मेलनों के चलते रहे दौर पर दौर।। - कैलाश आदमी

(आमुख) पृष्ठ ४-६

मासिक 'निर्दलीय' के आगामी अंक

विगत दो दशकों से नियमित प्रकाशित निर्दलीय प्रकाशन की बहुरंगी अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका 'निर्दलीय' प्रति माह विशेषांक के रूप मे प्रकाशित हो रही है। नई दिल्ली स्थित सलाहकार श्री सुरेश खांडवेकर एवं श्रीमती कविता मल्होत्रा और संरक्षक सेठ रामनिवास गुप्ता एवं श्री रमेश सिंह राघव के सहयोग से मासिक पत्रिका की साज-साज्जा और सामग्री में निरंतर उत्कृष्टता एवं विकास परिलक्षित है।

इस तारतम्य में आगामी वर्ष २०२५-२६ के लिए संपादकीय मंडल ने बारह विषयों का चयन किया है । आप सभी से प्रार्थना है कि आप इन विषयों पर अपने आलेख, खट्टे मीठे अनुभव, काव्य, कथा-कहानी,कविता, प्रहसन,संस्मरण अदि मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेज सकते हैं। आपसे निवेदन है निम्नलिखित विषयों पर प्रकाशित होने जा रहे निर्दलीय मासिक पत्रिका के विशेषांकों के लिए विषयांतर्गत सामग्री अवश्य भेजें। माहवार विषय इस प्रकार है-- जनवरी- नया साल, नया सोच, फरवरी - सर्वधर्म समभाव, मार्च- वासंती उल्लास, अप्रैल - फुर्सत, मई -सैर सपाटा, जून-मुखर अभिव्यक्ति, जुलाई- निर्दलीय के अंतरराष्ट्रीय वार्षिक सम्मान समारोह पर केंद्रित, अगस्त - स्वाधीनता और लोकतंत्र, सितंबर - भाषाई सौहार्द, अक्टूबर - पुस्तकें ही जीवन, नवंबर- शिक्षा और साहित्य, दिसंबर - पर्यावरण एवं जलवायु संरक्षण।

माह जनवरी २०२६ में प्रकाशित होने जा रहे विशेषांक हेतु - 'नया साल-नया सोच' विषय पर रचनाएं/आलेख १५ जनवरी २०२६ तक व्हाट्स ऐप/मेल पर मिल जाना चाहिए।

* कैलाश आदमी, संस्थापक संपादक
9424443401/ ८८३९७९७४४८
मेल nirdaliyadaily@gmail.com

निर्दलीय से जुड़ना अब आसान

निर्दलीय दैनिक / साप्ताहिक /मासिक (मुद्रित आकार)का शुल्क भेजना अब आसान हो गया है क्योंकि अब आप भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा भोपाल के हमारे निर्दलीय के खाता क्रमांक- 30030303507(IFSC code- sbin0001308 के अलावा हमारे मोबाइल फोन 9424443401 से जुड़े फोन पे या गूगल पे से भी शुल्क /सहयोग राशि भेज सकते हैं। दैनिक,साप्ताहिक व मासिक मुद्रित के साथ ई-पेपर भी हैं। ई-पत्रिका या पेपर हेतु शुल्क भेजना ऐच्छिक है।

मासिक निर्दलीय वार्षिकः रु.600/- साधारण डाक
(स्पीड पोस्ट रु. 1000)
संरक्षक/सलाहकार पद प्रतिष्ठार्थ

वार्षिक : रु।5000/- तीन वर्ष 11000/-
संरक्षक/सलाहकारः रु. 20000/-

नोट- दैनिक निर्दलीय प्रति अंक दो रु. (वार्षिक स्पीड पोस्ट से एक हजार रु), साप्ताहिक 'निर्दलीय' प्रति अंक पांच रु.(वार्षिक शुल्क 500 रु) साधारण डाक व्यय सहित। स्पीड पोस्ट से मंगवाना है तो 1000 रु. । साप्ताहिक व मासिक निर्दलीय दोनों स्पीड पोस्ट से मंगवाना है तो कुल राशि 2000 रु. भेजें।

व्यवस्थापकीय पता -निर्दलीय, एफ 116/7
शिवाजी नगर, भोपाल 462016

खाताधारक का नाम- निर्दलीय Nirdaliya
बैंक-भारतीय स्टेट बैंक
शाखा- मुख्य शाखा, भोपाल 462003
खाता क्र. 30030303507
आईएफएससी कोड (कूट संकेत) -एसबीआईएन 0001308
(sbin 0001308)

दैनिक निर्दलीय, साप्ताहिक निर्दलीय और मासिक निर्दलीय की वार्षिक ग्राहकी/संरक्षक/सलाहकार सहयोग राशि हेतु दूरभाष क्र. 9424443401/8839797448 पर phone pay/Google pay के जरिए जमा कर स्क्रीन प्रिंट भेजें।
-प्रबंधक

UPI ID: nirdaliyadaily@okhdfcbank

अंतरंग

स्तंभ	शीर्षक	लेखक/ कवि/समीक्षक	पृष्ठ
आमुख	जल-जंगल-जमीन...	कैलाश आदमी	४-६
आलेख	प्रकृति प्रतिशोध	इंदिरा किसलय	७
कविता	प्रकृति कितनी सहज	सुनीता त्रिपाठी	७
आलेख	प्रत्येक जीव में स्पंदित...	अनिल त्रिवेदी	८-९
कविता	पर्यावरण संरक्षण	डॉ. सीमा अग्रवाल	८
आलेख	जलवायु परिवर्तन	रानी सिंगला	९
--,,--	संस्कृति के मूल में...	डॉ. उर्मिला शर्मा	१०-११
कविता	किया प्रकृति का नाश	द्रौपदी साहू	११
आलेख	कुंडलियां छंद में प्रकृति	सौम्या पांडे 'पूर्ति'	१२-१३
कविता	बचाएं हम स्वयं को	मंजुला श्रीवास्तव	१३
आलेख	मानव मन लक्षित तो...	डॉ. कविता मल्होत्रा	१४
कविता	धरती माता	शशि प्रभा शाक्य	१४
आलेख	पर्यावरण और जलवायु परितर्वन	वंदना सहाय	१५-१६
कविता	कोहरे की चादर	शीला श्रीवास्तव	१६
आलेख	पिघलते ग्लेशियर	मनोरमा पंत	१७
--,,--	पर्यावरण के साथ दोगलापन	रति चौबे	१८
--,,--	प्रकृति के साथ छेड़छाड़	मनोज चतुर्वेदी	१८
--,,--	पर्यावरणः अभी नहीं तो कभी नहीं	डॉ. सुनीता शर्मा	१९-२०
समीक्षा	बच्चे होते फूल से (मनोज मधुर)	अनंत आलोक	२१-२२
कविता	रहा न पर्यावरण सुनहरा	कृष्णदेव चतुर्वेदी	२२
आलेख	जरूरत है पर्यावरण अनुकूलता की	सरस्वती मल्लिक	२३
--,,--	जलवायु परिवर्तन से कैसे निबटें	आशा गुप्ता	२४-२५
--,,--	एक वैश्विक संकट	श्याम सखी	२५
--,,--	पर्यावरण की सुरक्षा	चंचलिका शर्मा	२६
कविता	जलवायु परिवर्तन	मांडवी सिंह	२६
आलेख	मौसम के बदलते रंग	डॉ. पल्लवी सिंह अनुमेहा	२७
--,,--	ना ये धरा होगी...	मीना कुमारी परिहार 'मान्या'	२८
कविता	जिओ और जीने दो	सतीश चंद 'सतीश'	२८
आलेख	समुचित समाधान कठिन	ललित शर्मा	२९
--,,--	पर्यावरणीय बदलाव	वल्लभ किशोर शर्मा	३०
--,,--	कैसे रोकें पर्यावरण प्रदूषण	सुधा शर्मा	३१-३२

अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका निर्दलीय

संरक्षक/सलाहकार सुरेन्द्रनाथ दुबे, मेघा पाटकर, डॉ। पवन कुमार जैन, सोहनराज तातेड, सेठ रामनिवास गुप्ता, कविता मल्होत्रा, मधुवाला पांडे

कार्यकारी संपादक - प्रिय अभिषेक (प्रिंस अभिशेख अज्ञानी) ९८२६४२२८२० *प्रबंध सम्पादक- अशोक 'निर्मल'

मूल्य 10 रुपये/ विशेषांक 50/- वार्षिक 600/- पंजीकृत डाक 1000/- शुल्क फोन पे/जी पे 9424443401 QR CODE द्वारा या निर्दलीय (nirdaliya) के SBI मुख्य शाखा भोपाल खाता क्रमांक 30030303507 (IFSC code sbin0001308) अथवा निर्दलीय प्रकाशन के यूनियन बैंक (महाराण प्रताप नगर जोन-2 भोपाल) के खाता क्रं। 101211010000060 में जमा कर सकते हैं।

(RNI regnÐ DELHI/2006/19211) ईमेल nirdaliyadaily@gmailÐcom ई पेपर nirdaliyaÐcom

भोपाल कार्यालय/संपर्क: निर्दलीय प्रकाशन-एफ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२०१६ दूरसंपर्क०७५५ -२७७२४०६

स्वामी,मुद्रक-प्रकाशक-संपादक-कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी' (9424443401/8839797448) द्वारा निर्दलीस प्रेस, भोपाल से मुद्रित, राघव भवन सी 6/72 दयालपुर), दिल्ली 110 090 से प्रकाशित।

जल- जंगल- जमीन के उजड़ते गए ठौर। सम्मेलनों के चलते रहे दौर पर दौर।।

कैलाश आदमी

पेरिस में दस वर्ष पूर्व हुए जलवायु शिखर सम्मेलन के बाद ब्राजील के बेलेम में बारह दिवसीय शिखर सम्मेलन हुआ जिसमें वर्ष २०१५ में हुए पेरिस सम्मेलन के लक्ष्यों की पूर्ति न किए जाने पर चिंता व्यक्त करते हुए नई रन नीति बनाई गई।

दरअसल वैश्विक तापमान में निरंतर हो रही वृद्धि नागरिकों की चिंता का विषय तो है ही दुनिया के जागरूक देशों में पर्यावरण की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है किंतु जितनी बड़ी समस्या है उतना काम न किए जाने से चिंता बनी हुई है।

दुनिया में हो रहे जलवायु परिवर्तन का प्रभाव बिना केवल हमारी जनसंख्या बल्कि पर्यावरण भी प्रभावित हो रहा है। तापमान पहले से अधिक बढ़ जाने से यह दुनिया की चिंता का विषय हो गया है किंतु दुनिया के समृद्ध देश इस और ध्यान नहीं दे रहे हैं।

उदाहरण के लिए विश्व संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ के पास संसाधनों की कमी होने से यह संस्था निर्जीव हो गई है। उसका बजट बढ़ाने की वजह अमेरिका ने उसमें कटौती कर दी जिससे जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के प्रयासों पर विपरीत प्रभाव पड़ा है।

पेरिस में हुए पिछले सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन की समस्या का समाधान किए जाने हेतु जिन देशों ने संकल्प लिया उनमें अमेरिका भी शामिल था किंतु वह अपने वायदे से पीछे हट गया। यही नहीं उसने फंड में कटौती कर नजरें टेढ़ी कर ली। भारत और चीन ने भी अपने वायदों के अनुरूप काम नहीं किया। दिखावटी तौर पर कुछ काम अवश्य हुआ किंतु स्वच्छ पर्यावरण हेतु जितना काम किया जाना था उसकी तुलना में शतांश ही हो पाया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार पेरिस सम्मेलन के बाद ऊर्जा के क्षेत्र में काम किया गया लेकिन उसे पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। भारत में लगातार ऐसे उद्योग लगाये जा रहे हैं जिनसे प्रदूषण फैलता है। इसी तरह नव अनुसंधान की आड़ में अन्तरिक्ष में प्रयोग किए जा रहे है तथा अस्त्र शस्त्र निर्माण,परीक्षण और प्रयोगों में लगातार वृद्धि की जाती रही है। नदियों में लाशें और कचरा बहाए जाने का काम कम होने की बजाय बढ़ा ही है।

भारत में जल प्रदूषण ज्यादातर धार्मिक अनुष्ठान के नाम पर किया जाता है। खासकर दुर्गा और गणेश की लाखों मूर्तियां नदी तालाबों में डाली जाती हैं। इसी तरह कुंभ जैसे मेलो की आड़ में नदियों को प्रदूषित करने में अंध श्रद्धालु गौरवान्वित महसूस करते हैं।

कहने को धर्म विशेष के लोग प्रकृति पूजक होने का दावा करते हैं लेकिन जल जंगल और जमीन के दोहन में अग्रणी रहते हैं। दीवाली पर पटाखे फोड़ने को पवित्र धार्मिक क्रिया का स्वरूप दिया जाता है जबकि इससे सर्वाधिक प्रदूषण फैलता है। सरकार ने हरित प्राधिकरण और न्यायालय बना रखे हैं लेकिन उनके निर्णय कट्टरपंथी धर्म से जुड़े लोग नहीं मानते हैं बल्कि खुलेआम अवहेलना करते हैं। प्राधिकरण ने नई दिल्ली में हरित पटाखे फोड़े जाने की अनुमति दी लेकिन इस आड में पुरानी परम्परा जारी रखी गई।

मुस्लिम और ईसाई समाज के लोग ही नहीं हिन्दू समाज में भी पशुओं का बध किया जाता है जिससे प्रदूषण फैलता है। इसी तरह शराब कारखानों से सर्वाधिक प्रदूषण फैलता है लेकिन उनकी संख्या में लगातार वृद्धि देखी गई है । यही नहीं पीने वालों की संख्या भी उतरोतर बढ़ रही है। जिन राज्यों में शराब बंदी है वहां मंहगी शराब खुले आम मिल जाती है। नई दिल्ली में केजरीवाल सरकार शराब कांड में पलट दी गई लेकिन जो नई सरकार आई उसने दुकानें बढ़ा दी तथा शराब की दरो को और कम कर दिया।

नदियों को संस्कृति के उन्ययन से जोड़ते हुए जीवन वाहिनी तक कहे जाने वाले देश में नदी तालाबों के साथ समुद्र से भी खिलवाड़ किया जाता है। समुद्र में एटम बम जैसे विध्वंसक अस्त्र फेंक दिए जाते हैं जो जल को प्रदूषित करते हैं। नदी तालाबों और समुद्री प्रदूषण से मनुष्य ही नहीं जीव जंतु, पेड़ पौधे और जीव जंतु प्रभावित होते हैं वही तापमान पर विपरीत असर पड़ता है जिससे नाना प्रकार के रोग भी जन्म लेते हैं।

कोरोना जैसी नई बीमारी और आपदा को हम इससे

जोड़ कर देख सकते हैं। देश में मौसम भी प्रभावित होता है जिससे बाढ़ आती है । ज्वालामुखी फटने, आकाशीय बिजली गिरने जैसी घटनाएं भी होती हैं। इससे तापमान पर इतना प्रभाव देखा गया कि इस बार आइसलैंड में पहली बार मच्छर पाए गए। इसे नई आपदा के रूप में देखा जाएगा। इससे नई चुनौती भी उत्पन्न हुई है किंतु अधिकांश देशों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया है।

पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन पर ब्राजील सम्मेलन में जो विचार विमर्श हुआ वह स्वागत योग्य है किंतु ऐसे सम्मेलनों में जो निर्णय लिए जाते हैं उन पर अमल न करने से सम्मेलन की निरर्थकता सिद्ध होती है। अगर वैश्विक जलवायु व्यवस्था सिर्फ वायदों का पिटारा बनकर रह गई और कोई वास्तविक अमल नहीं हुआ तो जलवायु परिवर्तन बुरी तरह प्रभावित करेगा।

ज्ञातव्य है कि वर्ष १९९२ की संयुक्त राष्ट्र जलवायु संधि पर स्ट्रक्चर करने वाले पशुओं में भारत भी सम्मिलित रहा है। भारत के वर्तमान पर्यावरण मंत्री श्री भूपेंद्र यादव ने सम्मेलन के पहले दिन आशा व्यक्त की थी कि जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए सभी देश मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध होंगे।

संयुक्त राष्ट्र संघ का यह संगठन वैश्विक कार्यक्रम तय करता है । सम्मेलनों में प्रायः सभी विकासशील व विकसित देशों के प्रतिनिधि पहुंचते हैं । इस बार भी सम्मेलन में नेताओं ने लंबे चोड़े भाषण दिए किंतु पहले की तरह निष्कर्षों की अनदेखी की गई तो पूरी दुनिया नए नए संकटों से घिर सकती है। दुनिया में निरंतर बढ़ रहे वैश्विक तापमान पर चर्चा करते हैं ।

ताजा आंकड़ों से पता लगता है कि हर दशक में औसत वैश्विक तापमान ० .२७ डिग्री सेल्सियस दर से बढ़ रहा है । यह दर १९९० और २००० के दशक से दोगुना है । दूसरी ओर समुद्र का स्तर तेजी से बढ़ने की पुष्टि हुई है। जल स्तर में पिछले दशक में लगभग ४ .५ मि मी प्रति वर्ष वृद्धि हुई जिससे भावी विनाशकारी प्रभाव के संकेत मिलते हैं। विश्व मौसम विज्ञान संगठन के अनुसार २०२६ तीसरा सबसे गर्म वर्ष होगा। इसके पूर्व वर्ष २०२४ सबसे गर्म वर्ष था।

ऐसे संकेत है कि २०३० के दशक की शुरुआत तक तापमान वृद्धि १.५ डिग्री तक पहुंच सकती है। यदि अब भी वैश्विक नेता केवल भाषणबाजी करते रहे और गंभीर चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया तो जलवायु संकट और गहराता जाएगा ।

यह पहला अवसर है कि ब्राजील के बेलेम में आयोजित जलवायु सम्मेलन बिना कोई निर्णयात्मक कार्रवाई के समाप्त हो गया।

इसके पूर्व वर्ष २०१५ में जो पेरिस सम्मेलन हुआ था उसमें मानवता को जलवायु परिवर्तन के गंभीर और खतरनाक प्रभावों से बचाने के लिए जो निर्णय लिए गए थे उन पर अमल नहीं हो पाया जिसका प्रमुख कारण यह रहा कि अमेरिका ने पेरिस सम्मेलन में लिए गए निर्णयों पर अमल करने से इनकार कर दिया।

ब्राजील सम्मेलन में अमेरिका अनुपस्थित रहा। अन्य कई देशों ने इस सम्मेलन में हिस्सा लिया जिनमें भारत की भागीदारी उल्लेखनीय रही। सम्मेलन में उपस्थित विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने तापमान वृद्धि १.५ डिग्री सेल्सियस से अधिक होने की संभावना पर विचार विनिमय किया जिसके दौरान कहा गया कि तापमान वृद्धि से दुनिया गंभीर रूप से अशांत और असुरक्षित हो सकती है। यह भी कहा गया कि यदि ब्राजील सम्मेलन में दुनिया के विकसित देश भाग लेते तो सम्मेलन निर्णायक स्थिति में पहुंच सकता था।

दस साल पहले दुनिया के जिन नेताओं ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी उन्होंने पेरिस समझौते में लिए गए निर्णयों के अनुरूप काम नहीं किया जिससे कहा जा सकता है कि मानवता दाव पर लगी है लेकिन विशेषकर विकसित देश कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने और लिए गए निर्णयों पर अमल के लिए वित्त पोषण जैसे मुद्दे से पीछे हट रहे हैं जिससे दुनिया ने एक महत्वपूर्ण मौका गंवा दिया है और जलवायु परिवर्तन को लेकर जीती हुई बाजी हारने में चिंताजनक भूमिका निभाई है।

ब्राजील सम्मेलन में मुख्य रूप से विकासशील देशों ने भाग लिया जिन्होंने सभी देशों से हरित ऊर्जा व हरित तकनीक अपनाने व कार्बन उत्सर्जन को तत्काल प्रभाव से शून्य स्तर पर लाने की वकालत की। यह देश मान रहे हैं कि अत्यधिक कार्बन उत्सर्जन, ओजन परत में छेद व मौजूदा जलवायु संकट के लिए विकसित देश जिम्मेदार हैं इसलिए वे अपनी असफलताओं को विकासशील देशों पर थोप कर अपने दायित्व से मुक्त नहीं हो सकते।

ज्ञातव्य है कि पेरिस समझौते में दुनिया में हो रही तापमान वृद्धि को १.५ डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखने, विकासशील देशों की ओर ज्यादा आशा ना रखते हुए विकसित देशों द्वारा वित्त पोषण करने, वैश्विक जलवायु कोष बनाने और विकासशील देशों को सस्ती व सुलभ हरित तकनीक देने विषयक लक्ष्य निर्धारित किए गए थे तथा इस हेतु अमेरिका ने अगुवाई की थी लेकिन इस समझौते से अमेरिका ही पीछे हट

गया जिससे पेरिस समझौते में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति अधर में लटक गई।

वैसे २०१५ के बाद दस सम्मेलन हुए लेकिन विकसित देशों के उपेक्षापूर्ण रवैए के कारण दुनिया के देश जलवायु परिवर्तन की बाजी हारने पर मजबूर हुए। वर्ष २०२५ की शुरुआत में हेमबर्ग में अर्थलीग से जुड़े वैज्ञानिकों के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क की बैठक हुई थी तथा महीनों के विचार विमर्श के बाद ब्राजील सम्मेलन के पूर्व निष्कर्ष प्रकाशित हुए जिसमें यह परिणाम निकाला गया कि मानवता सीमाओं से परे जा रही है। यह भी कहा गया कि १.५ डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान पर चरम जलवायु घटनाएं जैसे सूखा, बाढ़, आग और गर्म लहरों की संख्या बढ़ती है जिससे दुनिया के अरबों लोग प्रभावित होते हैं। इसके लिए सबसे पहले हमें जीवाश्म इंधन के चरणबद्ध उन्मुलन में तेजी लाना होगी ताकि अब से कम से कम ५ प्रतिशत वार्षिक वैश्विक उत्सर्जन में कमी लाई जा सकी। इसके साथ ही हमें अगले दशक के भीतर वैश्विक खाद्य प्रणाली में बदलाव करना होगा ताकि यह प्रतिवर्ष ३ अरब टन कार्बन डाई आक्साइड को अवशोषित करने में सक्षम हो सके।

यही नहीं हमें हर साल वायुमंडल से अतिरिक्त पांच अरब टन कार्बन डाइ आक्साइड को हटाने और उसे जमीन में सुरक्षित रूप से संग्रहित करने के लिए नए तरीके अपनाए जाने की आवश्यकता है।

ब्राजील में आयोजित शिखर सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने केंद्रीय पर्यावरण मंत्री श्री भूपेंद्र यादव को भेजते हुए यह उम्मीद जताई थी कि वार्ता से सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे लेकिन उनकी उम्मीद पूरी ना हो सकी। इसी तरह दक्षिण एशिया के विशेष दूत के रूप में अरुणाभ घोष ने ब्राजील सम्मेलन में हिस्सा लिया किंतु सम्मेलन में गंभीरता से विमर्श ना होने के कारण वैश्विक जलवायु व्यवस्था सिर्फ वादों का पिटारा बनकर रह गई और कोई वास्तविक परिणाम सामने नहीं आया।

जहां तक वैश्विक तापमान तेजी से बढ़ने, समुद्र का स्तर तेजी से बढ़ने और झीलें तथा जलधाराएं खतरे में पढ़ने का मुख्य कारण के केवल अमेरिका द्वारा सहायता में कटौती करना या पेरिस समझौते से पीछे हटना ही नहीं रहा बल्कि, चीन, रूस, भारत, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन, जापान आदि सभी प्रमुख देशों द्वारा परमाणु शक्ति के विस्तार हेतु जो कदम उठाए जा रहे हैं वे भी वैश्विक जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण पर भारी पड़ रहे हैं। यही नहीं इन देशों में जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण रोकने हेतु कारगर कदम उठाने की बजाए नदी-तालाबों व समुद्र में नव तकनीकी आयुधों के परीक्षण और पुराने आयुधों को ठिकाने लगाने जैसे काम किए जा रहे हैं तथा प्रायः सभी प्रमुख नगरों में ही नहीं कस्बों से लेकर गांवों तक यातायात के यांत्रिक साधनों में लगातार वृद्धि की जा रही है। इस तरह की गतिविधियों से गर्म, तीव्र वैश्विक तापमान में पहले से अधिक तेजी से वृद्धि हो रही है। २०२५ के आंकड़ों से पता चलता है कि प्रति दशक में औसत वैश्विक तापमान ०.२७ डिग्री सेल्सियस की दर से बढ़ रहा है। यह दर १९९० और २००० के दशक से दो गुनी है। समुद्र का जलस्तर तेजी से बढ़ा है जो पिछले दशक में लगभग ४.५ मिमी प्रति वर्ष बढ़ता रहा। विश्व अब २०३० के आसपास १.५ डिग्री सेल्सियस तापमान वृद्धि की सीमा को पार करने की राह पर है। यदि विकसित व विकासशील देशों ने जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण मुद्दे को गंभीरता से नहीं लिया तो निश्चय ही मानवता गंभीर संकट में पड़ सकती है।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

जल- जंगल- जमीन के उजड़ते गए ठौर।
सम्मेलनों के चलते रहे दौर पर दौर।।

ब्राजील सम्मेलन

प्रकृति प्रतिशोध भी लेती है !

इन्दिरा किसलय

चार सौ करोड़ साल पुरानी पृथ्वी अपनी दुर्दशा पर आँसू बहा रही है। मनुष्य की भौतिक लालसाओं ने नैसर्गिक संसाधनों को तबाह कर डाला है।भूमिगत जल का भीषण दोहन और वर्षा जल के संरक्षण को लेकर उदासीनता ने भारी जल संकट की चेतावनी दी है।यू एन की रिपोर्ट के अनुसार वर्षांत तक विश्व में १८० करोड़ लोग जल की भयावह कमी से जूझ रहे होंगे। २०५० तक यह संकट त्राहि माम् वाली स्थिति उत्पन्न करेगा। भारत के ३० शहरों में स्थिति विस्फोटक होगी।

अगर हम भारत की बात करें तो ३६० जिलों में भूजल की गिरावट चिन्तनीय है। बाँधों के जलस्तर में भारी कमी आई है। बिहार की ४०प्रतिशत नदियों में पानी नहीं बचा। पंजाब में ७८ प्रतिशत जलस्त्रोत अति दोहित हैं। चेन्नई का पेयजल को लेकर हाहाकार सभी ने देखा है।

मुंबई छोड़कर समूचे महाराष्ट्र में पानी की भारी कमी है। विदर्भ और मराठवाड़ा सूखा है। विगत वर्ष लातूर के जलसंकट से निपटने के लिये पानी की ट्रेन भेजी गयी थी। भीषण जल संकट के पीछे लोगों में सामाजिक चेतना , दायित्व बोध का अभाव ,सिविक सेंस की भारी कमी है। सार्वजनिक स्थानों पर नल बहते रहते हैं।नगर निगम सोता रहता है।पानी बहता है बहता रहे ,अपना नुकसान थोड़े ही है-- यह धारणा राष्ट्र का भारी अहित करती है। हर घर में महरी लगातार नल खुला रखती है।कत्लखानों में पानी का भयंकर अपव्यय होता है।

दु:ख इस बात का है कि जल संकट पर स्वयं को दिन रात चिन्ता में निमग्न दिखानेवाला इलीट क्लास अधिकांशत: पानी की बर्बादी के लिये जिम्मेदार है। कहने की जरूरत नहीं कि अधिकांश लोगों के लिये केवल अपने घर की हद तक हिन्दुस्तान है।लखनऊ के नवाबों की तरह जल संकट से निबटने के लिये एक जुमला उछलता रहता है- पहले तुम-पहले तुम !

पेड़ों की अंधाधुंध कटाई और सीमेंटीकरण भी कम जिम्मेदार नहीं। बारिश के पूरे पानी का ८५प्रतिशत समुद्र में बह जाता है। ये स्थितियां भी हमें सचेत नहीं कर पातीं तो जल युद्ध के लिये तैयार रहना होगा।

२०१९ में भारत में जल शक्ति अभियान शुरू किया गया था। जल है तो कल है इस नारे से कुछ न होगा। पूरी शिद्दत से संरक्षण के प्रयास करने होंगे। यह तभी होगा जब हम इस समस्या को प्राणों से महसूस करेंगे। अमेठी के एक गांव में जलक्लब का गठन हुआ है।संस्था घर घर जाकर पानी बचाने के नुस्खे समझा रही है। डकिया जोगी गांव में महिलाओं ने जल क्लब बनाया है। रेडियो से प्रसारित कार्यक्रम 'बूँदों की न टूटे लड़ी' का असर है कि लखनऊ आकाशवाणी ने १०० दिन श्रृंखला चलाई है जिसमें ब्यूरोक्रेट्स,वैज्ञानिक, गीतकार, गायक ,अभिनेता, नेता, वैज्ञानिक, चित्रकार, पत्रकार आदि शामिल हैं।

अब १०० प्रतिशत सरकार के मुखापेक्षी रहने से काम नहीं चलेगा,गांव से लेकर शहर तक अभियान चलाना होगा।अपने अपने स्तर पर जल बचाना है। बूँदों के योग को ही समंदर कहते हैं ना। अन्यथा सिंगापुर की तरह गंदे पानी को पेयजल में बदलने या मलयेशिया की तरह पानी आयात करने की नौबत न आ जाये। धरती सब कुछ देती है। कृतघ्न मानव उसका एहसान नहीं मानता। उल्टा उसे नोंचता खसोटता रहता है। क्या हमें ये बताने की जरूरत है कि प्रकृति प्रतिशोध भी लेती है?

-नागपुर

प्रकृति कितनी सहज!

डॉ. सुनीता त्रिपाठी

प्रकृति में घटित कुछ घटनाएं...
सब कुछ कितना सहज,
कितना निष्कलंकित होती है—
कि जब यह घटित होती है, तो
इसके होने का
और निरंतर बहते रहने का
आभास भी नहीं होता।
प्रत्येक प्रभात— बिना किसी उद्घोषणा के
सूर्य का उदित हो जाना,
और मौन में ही फूलों का खिलकर रंगीन हो जाना
मंद बयार के शीतल स्पर्श भर से
नीर से भरे मेघों का अचानक उमड़ पड़ना
और प्रेम में विकल होकर रिक्त हो जाना
श्वासों का निरंतर आना-जाना,
और तंद्रा घिरते ही
पलकों का अनायास
धीमे से बन्द हो जाना और बन्द नेत्रों में
प्रियतम की छवि का अनायस ही प्रकट हो जाना।
सब कुछ कितना स्वाभाविक, कितना अविकल!
सरल होना तो सदैव से सहज ही था—
पर वही सरलता जीकर दिखाना
इतना दुरूह क्यों हो जाता है?

- लखनऊ

अनिल त्रिवेदी

प्रत्येक जीव में स्पंदित है प्रकृति

मनुष्य का आकार एक निश्चित क्रम में होता है।जीव के जीवन में गति होती है।जीव के जीवन में स्पंदन होता है।प्रकृति सनातन है।बिना स्पंदन के जीवन की कोई गति नहीं।गतिहीन व्यक्ति समाज को आकार नहीं दे सकता।

गतिशील व्यक्ति ही समाज को तात्कालिक रूप से आकार देता आभासित महसूस होता हैं पर मूलत: यह मानवी ऊर्जा का अस्थायी एकत्रीकरण ही होता है।गतिशीलता प्रकृति का सनातन स्वरूप हैं।जीव प्रकृति का आकार है पर प्रकृति सनातन निराकार स्वरूप में गतिशील रहकर प्रत्येक जीव को स्पंदित रखती है। जीव का स्पंदन ही जीवन के सनातन आकार को गतिशीलता प्रदान करता हैं।आकार से निराकार और निराकार से आकार की अभिव्यक्ति ही प्रकृति का सनातन स्वरूप हैं जो एक निरन्तर गतिशील स्वरूप में व्यक्ति से समाज में चेतना के स्वरूप में स्पंदित होती रहती है।

मनुष्य के जन्म से याने साकार स्वरूप में आने से मृत्यु के क्षण याने निराकार में विलीन होने तक ही मनुष्य का व्यक्तिगत जीवन मानते हैं पर निराकार स्वरूप पाया मनुष्य , स्मृति स्वरूप जीवन का हिस्सा बन जाता हैं।मनुष्य ही इस प्रकृति का अनूठा जीव है जो अपने निराकार विचारों को साकार करने की क्षमता रखता हैं।

इस धरती पर ही मनुष्य ने जीवन के रहस्यों को जानने, समझने और उजागर करने के जितने प्रयास किये हैं उतने अन्य किसी जीव ने नहीं।इसी से मनुष्य के मन में प्रकृति पर विजय का विचार जड़ जमाता जा रहा हैं। प्रकृति मनुष्य को जी भर खेल खेलने देती हैं,मनुष्य को रोकती नहीं पर अपने निराकार और सनातन स्वरूप से मनुष्य के मन में यह भाव बार बार पैदा करती है कि मनुष्य और प्रकृति के बीच सम्बन्ध जय पराजय के नही अनन्त सहजीवन के हैं।

जीवन भर हाड़ तोड़ मेहनत के पश्चात्त अधिकतर मनुष्यों को यह आत्म ज्ञान कालक्रमानुसार हो जाता है कि मनुष्य भी मूलत: प्रकृति का अंश ही है उससे कम या ज्यादा नहीं।मूलत: प्रकृति और मनुष्य एक दूसरे से ऐसे घुले मिले या मिले जुले है कि दोनों को एक दूसरे से पृथक किया ही नहीं जा सकता है। समझने के लिये यह धरती,मनुष्य,सारे जीव जन्तु,पेड़ पौधे सब पंचतत्वों से अभिव्यक्त हुए हैं। इन सब के आकार स्वरूप में भिन्नता होते हुए भी जीवन और स्पंदन में अभिन्नता होती है।

मनुष्य अपने कृतित्व और विचारों से खुद भी और दूसरें मनुष्यों से भी प्रभावित होता हैं और एक दूसरे को परस्पर प्रभावित भी करता है।मनुष्य में मानवीय मूल्यों को समाज में विस्तारित करने और लोगों के बीच नफरत,कटुता,वैमनस्य का विस्तार करने की भी बराबरी से क्षमता होती है।मोहब्बत और नफ़रत,अपनत्व और कटुता,सौमनस्य और वैमनस्य उठती गिरती लहरों की तरह ही मन की अभिव्यक्तियां हैं जो हर मनुष्य के मन मस्तिष्क में दिन रात की तरह आती जाती रहती हैं।

मनुष्य चिन्ता और चिन्तन सतत करते रहते हैं। ये दोनों मनुष्य की प्रकृति के हिस्से हैं पर प्रकृति इस झंझट से दूर हैं। न चिन्ता न चिन्तन, न वैमनस्य न सौमनस्य,न मोहब्बत न नफरत,न अपनत्व न कटुता।

प्रकृति में कोई भाव ही नहीं हैं इससे प्रकृति में कभी कोई अभाव नहीं होता।इसी से प्रकृति सदैव प्राकृत स्वरुप में होती है। एक क्रम में निरन्तर हर क्षण है ,हर कहीं व्याप्त है ,सनातन प्राकृत स्वरूप में। प्रकृति ने मनुष्य को अभिव्यक्त किया साथ ही अपने को हर रूप, रंग और भाव में अपने स्वभाव अनुरूप अभिव्यक्त करने की क्षमता दी पर प्रकृति ने कभी अपने रूप,रंग और स्वभाव में काल अनुसार बदलाव नहीं किया। प्रकृति ने अपने सनातन प्राकृतिक स्वरूप में निरन्तर जीव और जीवन के क्रम को सदा सर्वदा से और सदा सर्वदा के लिये स्पंदित और गतिशील रखा और रखेगी।यह प्रकृति का प्राकृत और सनातन स्वरूप हैं।

कभी कभी मनुष्यों को यह लगता है कि मनुष्य के कृतित्व ने प्रकृति याने कुदरत के क्रम को बदल दिया है। हमें यह लगने लगता है कि हमारा जीवन अप्राकृतिक हो

पर्यावरण संरक्षण

डॉ. सीमा अग्रवाल

लालच ने आदमी को
अंधा बना दिया,
पानी को प्रदूषित कर वहीं पी रहा।
पेड़ काट कर छाया को ढूंढ रहा,
ताजी हवा की
तलाश में भटक रहा।
स्वयं अपने पैरों पर
कुल्हाड़ी मार रहा,
गाड़ी और एसी में
बैठकर घूम रहा,
और अच्छे स्वास्थ्य
की कल्पना कर रहा।
आदमी इतना अंधा हो गया।
अच्छे स्वास्थ्य के
लिए जिम जा रहा,
सुबह की ताजी हवा के लिए वह,
सैर पर पैदल नहीं चल रहा,
सब्जी में केमिकल
पदार्थ डाल रहा,
गंदे पानी को खेती
में प्रयोग कर रहा,
जमीन पर पेड़ लगाने की जगह,
बड़े-बड़े मकान बनाए जा रहे हैं।
दो- दो, तीन- तीन गाड़ियां, मकान
खरीद रहा,
फैलते प्रदूषण पर चिंता जाता रहा।
आने वाली नस्ल को
क्या शिक्षा दे रहा?

-भोपाल

गया है। हमें अपना जीवन प्राकृतिक बनाना चाहिये। हमारा विकास प्राकृतिक रूप से होना चाहिये। यहां फिर एक सवाल उठता हैं कि मनुष्य खुद ही जब प्रकृति का अंश हैं तो वह अप्राकृतिक कैसे हो सकता है? क्या प्रकृति अपने अंश में अप्राकृतिक हो सकती है? दोनों ही स्थितियां संभव नहीं हैं। हमारी इस धरती पर मनुष्यों की जितनी संख्या आज जिस रूप ,आकार या संख्या में हैं उतनी संख्या में ज्ञात इतिहास में एक साथ कभी नहीं रहीं।आज धरती पर प्रकृति को मनुष्यों या जीव जन्तु,पेड़ पौधों से कोई समस्या नहीं हैं।

मनुष्य की प्रकृति में समाधान कम समस्यायें ज्यादा दिखाई पड़ रही हैं। मनुष्य का जीवन भौतिक संसाधनों पर ज्यादा अवलम्बित होता जा रहा हैं। मनुष्य की जिन्दगी में राज्य और बाज़ार के संसाधनो की बाढ़ आगयी। इससे मनुष्य की प्रकृति और प्रवृत्ति में मूलभूत बदलाव यह दिखाई देने लगा हैं कि हम सब एक बड़े दर्शक समाज में बदलने लगे हैं। इस धरती पर जितने भी मनुष्य है उन सबको एक न एक समस्या एक दूसरे से जरूर है। आज के अधिकांश मनुष्य परस्पर एक दूसरे को सहयोगी साथी न समझ समस्या समझने लगे हैं । यही हम सब की समझ में हुआ बुनियादी फेरबदल है जिसमें हम सब उलझ गये हैं।

मनुष्य की प्रकृति एकांगी होते रहने से मनुष्यों की दूसरे समकालीन मनुष्यों के प्रति सोच और व्यवहार में एक अजीब सा बनावटीपन दिन ब दिन बढ़ता ही जा रहा हैं। मनुष्य का मनुष्य के प्रति और प्रकृति के प्रति बुनियादी नजरिया व्यापक से संकुचित वृत्ति की ओर बढ़ रहा है।

एक स्थिति यह भी उभर रही है की आर्थिक सम्रद्धि के विस्फोट से मनुष्यों का वैश्विक आवागमन एकाएक बहुत बढ़ गया है।इससे भी मनुष्य की मूल प्रकृति और प्रवृत्ति में बुनियादी बदलाव हुआ है जिससे सामान्य मनुष्यों के मन में भी यह भाव जग रहा हैं की पैसे की ताकत से धरती और प्रकृति के साथ जो मन में आवे वह कर सकते हैं। इसी से अधिकतर मनुष्यों के जीवन की अवधारणा और प्रकृति ही सिकुड़ गयी है।इतनी व्यापक धरती और प्रकृति और इतना एकांगी मनुष्य जीवन ,विचारऔर व्यवहार समूची दुनिया में उभरा मानवीय संकट है जिससे प्रकृति के विराट स्वरुप की तरह व्यक्तिगत जीवन में व्यापक होकर हम सब इस संकट से उबर सकते हैं।

- अभिभाषक ,स्वतंत्र लेखक ,इन्दौर

जलवायु परिवर्तन

रानी सिंगला

विश्व व्यापी जलवायु परिवर्तन का असर मानव स्वास्थ्य पर पड़ा है। तापमान में बदलाव ने प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को अस्त-व्यस्त कर दिया ।

पिछले कुछ वर्षों में, वर्षा और तापमान में बदलाव के कारण, जल-जनित और खाद्य-जनित बीमारियों, वायरल बीमारियों, और कीड़ों के माध्यम से फैलने वाली बीमारियों की मात्रा में वृद्धि हुई है।

आजकल पर्यावरण ऐसा हो गया है कि ज़्यादा बर्फ पिघलेगी, महासागर बढ़ेंगे, कहीं गर्मी बढ़ेगी, कहीं सर्द हवाएँ, कहीं ज़्यादा बारिश होगी और कहीं हर साल सूखा पड़ेगा।

जलवायु परिवर्तन के कारण पर्यावरण में हो रही रद्दोबदल से कहीं तेज़ तूफान आ सकता है, नदियाँ सूख सकती हैं, कुछ भी हो सकता है। सब कुछ बदल सकता है... वातावरण में धुँआ धुँआ सा क्या हैं देखो जहां को क्या हो गया है! इसका सर्वाधिक दुष्प्रभाव देश की राजधानी नई दिल्ली में देखा जा सकता है जहां सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर विद्यालयों के समय में परिवर्तन तथा खेलकूद के आयोजनों को प्रतिबंधित करना पड़ा है।

निरंतर बढ़ते जाते प्रदूषण और वातावरण से इंसान के लिए खतरा बढ़ता जा रहा है। खेतों में पराली जला रहा है किसान। यातायात के बढ़ते साधनों से भी वातावरण में सांस लेने से भी हो रहा नुकसान ज्यादा खतरनाक है किंतु इसकी किसी को फ़िक्र नहीं है, ना आज की और ना कल की।

जलवायु परिवर्तन पर मेरी कविता के कुछ अंश-

ये जीने का अन्दाजे
बयां क्या है!
होते थे जो मौसम
कभी पहले,
सर्दी,गर्मी और बरसात
हो या कि बसंत बहार!
अब किसी भी मौसम में
कुछ भी हो जाता है
ना जाने अब क्या क्या
हो गया है!
राम जाने कैसे
जीवन निर्वाह होगा?

-लुधियाना

संस्कृति के मूल में पर्यावरण संरक्षण

डॉ. उर्मिला शर्मा

प्राचीन काल से ही भारत की संस्कृति में लोग पर्यावरण के महत्व से अवगत रहे हैं। उनकी दिनचर्या ही सुबह उठकर सूर्य- नमस्कार के साथ प्रकृति के साहचर्य में आरम्भ होता रहा है। हमारे वैदिक मंत्रों में पर्यावरण संरक्षण की बात कही गई है। यह धरती हमारी माता सदृश्य है जो सबका पोषण करती है। वेदों में पेड़ों को न काटने की बात कही गई है। अधिकतर पेड़ों को हमारी संस्कृति में धर्म एवं लोक महत्व से जोड़कर देखा गया है। पृथ्वी एवं जल संरक्षण हमारा धर्म है। संविधान में भी पर्यावरण संरक्षण को लेकर कई कानून निर्मित हैं।

सालों से मनुष्य अपनी अनियंत्रित इच्छाओं के कारण प्रकृति का दोहन करता आ रहा है जबकि प्रकृति से हमें उतना ही ग्रहण करना चाहिए जिससे उसकी पूर्णता को नुकसान न पहुंचे। आज मानव का प्रकृति के साथ अन्तःक्रिया बहुत व्यापक हो गया है जिसके कारण पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएं विकट होती जा रही हैं। औद्योगिकीकरण, नगर विस्तारीकरण, बढ़ती जनसंख्या, और जटिल न्याय प्रक्रिया के कारण पर्यावरण की क्षति हो रही है।

प्राचीन काल से मनुष्य प्रातः उठने के साथ सूर्य नमस्कार के साथ प्रकृति के प्रति अपना श्रद्धा समर्पित करता था। वेदों में धरती के मातृ रूप को देखा व समझा गया है जो इस बात का प्रमाण है कि हमारे ऋषियों में पर्यावरण की गहरी समझ थी - माता भूमि पुत्रोहंपृथिव्या। तुलसीदास ने भी किष्किन्धाकाण्ड में मनुष्य शरीर और पर्यावरण के समन्वय को स्पष्ट दर्शाया है - क्षिति-जल पावक गगन समीरा, पंच तत्व मिली बना सरीरा।

पंच वनों की वटी पंचवटी में भगवान श्री राम की तपस्या भूमि थी। भगवान बुद्ध को भी बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। बौद्ध धर्म में पर्यावरण संरक्षण की बात खूब की गई है। बुद्ध ने संघ के भीतर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए कठोर नियम बनाए थे। उनके उपासकों के लिए पंचशीलों का पालन करना अनिवार्य है।

हमारे देश में पौधों के लोक महत्व में पर्यावरण संरक्षण ही मूल में स्थित है। तुलसी का पौधा हमारे यहां विशिष्ट सम्मान व श्रद्धा के साथ पूजित होता है। इसी के साथ केला, पीपल, नीम, बेलपत्र तथा बांस का स्थान है। हमारे आदिवासियों का तो प्रकृति के साथ गहरा नाता है।

स्वतन्त्रयोत्तर भारत में आधुनिकीकरण के कारण नदियों पर बड़े- बड़े बांधों का निर्माण हुआ जिसे नेहरू जी ने आधुनिक भारत का मंदिर कहा लेकिन गांधीवादियों ने इसे प्रकृति के लिए विनाशकारी माना। पर्यावरण चेतना का आरम्भ १९७२ में स्टॉकहोम में आयोजित मानव- पर्यावरण सम्मेलन के पश्चात हुआ। इसके संरक्षण का उद्देश्य वर्तमान एवं भावी पीढ़ी हेतु जल, वन, वन्यजीव तथा ऊर्जा सरीखे प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित रखना है। औद्योगिकीकरण के कारण जब पर्यावरण में ह्रास दिखाई पड़ने लगा तब १९ वीं सदी के अंत से पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा ने जोर पकड़ा। तभी जॉन मुइर एवं गिफर्ड पिंचोट जैसे संरक्षणवादियों ने पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी प्रयासों की नींव डाली। एक वैचारिक आंदोलन के रूप में पर्यावरण संरक्षण पश्चिमी राजनीति में १९७० के दशक में उभरा जिससे आज समस्त विश्व परिचित है।

पृथ्वी विविधताओं से पूर्ण है। सभी का पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित रखने के महत्वपूर्ण योगदान है। अनियंत्रित प्रदूषण, आवास विनष्टीकरण के कारण कार्य बाधित होता है जिससे कई पेड़- पौधे और जीव- जंतु विलुप्ति की ओर बढ़ने लगते हैं। जैव विविधता के इस क्षति के कारण स्वच्छ जल, खाद्य सुरक्षा आदि तक पहुंच पारिस्थिकी तंत्र के संतुलन को खतरे में डालता है। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि इससे पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट हो जाएगा और वन्यजीवों का भारी पैमाने पर विलुप्तीकरण, लोगों का विस्थापन एवं खाद्यान की कमी होगी।

हमारी गतिविधियां- उच्च स्तरीय जंगलों की कटाई व जीवाश्म ईंधन का जलना हमारी जलवायु को भीषण नुकसान करते हैं। ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन वायु गुणवत्ता को प्रभावित कर तथा ग्लोबल वार्मिंग में सहयोग कर पर्यावरणीय चुनौती में योगदानकर्ता की भूमिका निभा रहा है।

पर्यावरण संरक्षण का क्षेत्र बहुत व्यापक एवं बहुआयामी है। इनमें प्रत्येक क्षेत्र प्राकृतिक जगत के विभिन्न भागों के संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है। पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत में कई पर्यावरण आंदोलन हुए जिससे भारतीय समाज को एक नवीन आयाम प्राप्त हुआ। इन पर्यावरणीय आंदोलनों के मूल में पर्यावरण का विनाश ही है। पर्यावरण आंदोलन को हम तीन भागों में विभाजित कर देख सकते हैं -

१. जल संरक्षण से सम्बंधित आंदोलन- टिहरी बचाओ आंदोलन, चिल्का बचाओ आंदोलन, गंगा मुक्ति आंदोलन, पानी पंचायत इत्यादि। पानी को प्रदूषण से रहित करना, पेयजल की उपलब्धता एवं संरक्षण की परम्परागत तकनीकों का उपयोग करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

२. जंगल से जुड़े आंदोलनः विश्नोई आंदोलन, चिपको आंदोलन, अप्पिको आंदोलन, साइलेंट घाटी आंदोलन वगैरह जिनका प्रमुख उद्देश्य वन संरक्षण, जैव विविधता कीका संरक्षण और संसाधनों में आम मनुष्य की भागीदारी निश्चित करना है।

३. पर्यावरण संरक्षण हेतु कानूनः देश में लगभग ३० मुख्य कानून व योजनाएं केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा प्रभावी हैं - वन्य जीव संरक्षण अधिनियम १९७२, पर्यावरण संरक्षण अधिनियम

१९८६, वन संरक्षण अधिनियम १९८० वायु संरक्षण अधिनियम १९८१, यमुना नदी कार्य योजना १९९३ और गंगा नदी कार्य योजना १९८५।

इसी प्रकार भूमि से सम्बंधित आंदोलनों में बीज बचाओ आंदोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलनतथा टिहरी बचाओ आंदोलन आदि हैं जो मिट्टी की उर्वरा बढ़ाने, मिट्टी का कटाव रोकने और बड़े- बड़े परियोजनाओं के कारण विस्थापित लोगों के अधिकारों के लिए संघर्षशील है। हमारे देश की नारी शक्ति में अग्रणी मेधा पाटेकर, सुनीता नारायण, अरुंधती रॉय, राधा भट्ट, कमला चौधरी और हर्षवती विष्ट, वंदना शिवा आदि पर्यावरण संरक्षण हेतु वर्षों से संघर्षरत हैं।

माधव गाडगिल और रामचन्द्र गुहा ने इस सम्बंध में तीन वैचारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं - गांधीवादी, मार्क्सवादी एवं तकनीकी दृष्टिकोण। मानवीय मूल्यों का क्षरण, आधुनिक उपभोक्तावादी जीवन शैली एवं पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं के लिए जिम्मेदार है। गांधीवादियों के अनुसार इसके समाधान हेतु हमें प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की ओर लौटना होगा। ग्रामीण जीवन की ओर लौटकर सामाजिक व पर्यावरणीय सौहार्द को बढ़ावा देना होगा।

मार्क्सवादी दृष्टि के अनुसार राजनीतिक व आर्थिक आयामों को पर्यावरणीय संकट से जोड़कर देखा गया है। तीसरा तकनीकी दृष्टिकोण आधुनिक तकनीक माध्यमों के मध्य सामंजस्य लाने का प्रयास करता है। पश्चिमी विचारधारा, प्रकृति के प्रति उपयोगितावादी दृष्टि रखती है किंतु आर्ने नेस का प्रकृति तथा पारिस्थिकी सन्तुलन का विचार उपयोगितावादी न होकर नीति मीमांसा पर आधारित है, इसलिए यह प्रासंगिक भी है।

हाल ही में पिछले अप्रैल २०२५ को हैदराबाद के ४०० एकड़ में विस्तृत कांचा गाजीबोवली जंगल (चत्रस्त्र) जिसे हैदराबाद का फेफड़ा कहा जाता है, को काटकर तेलंगाना सरकार आईटी पार्क बनाना चाहती थी। यहां वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, १९७२ के अनुसार अनुसूची -१ संरक्षित प्रजातियों का घर भी है। साथ ही यहां २३३ पक्षी प्रजातियों का निवास है। छात्रों, स्थानीय लोगों व पर्यावरणविदों के काफी विरोध के बाद सुप्रीम कोर्ट ने इसकी कटाई पर रोक लगा रखी है।

वर्तमान में विकसित व विकासशील राष्ट्रों की यह जिम्मेदारी है कि प्राकृतिक संरक्षण हेतु सजग और प्रयत्नशील रहें। विकसित देश अपने हरित उर्जा एवं आधुनिक तकनीक को विकासशील देशों को उपलब्ध कराएं। दूसरी तरफ विकासशील देश पर्यावरणीय प्रदूषण कम कर नवीकरणीय ऊर्जा अपनाने का प्रयत्न करें। अपने स्वार्थ एवं लाभ के लिए प्रकृति का असन्तुलित दोहन पर नियंत्रण रखें।

निष्कर्ष - भारतीय सभ्यता और संस्कृति संसार के प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। हमारे ऋषि- मुनियों ने अपने योगबल के द्वारा प्रकृति से तारतम्यता स्थापित किया और पर्यावरण को विशेष महत्व दिया। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता गम्भीरता पूर्वक महसूस किया गया है। यह मनुष्य का नैतिक कर्तव्य होगा कि उसे निजी स्वार्थ के लिए प्रकृति का अंधाधुंध दोहन को नियंत्रित करना होगा। इसकी उपेक्षा से पृथ्वी का भविष्य अंधकारमय सिद्ध होगा जिसका गम्भीर परिणाम हमें ही भुगतना पड़ेगा। अन्ततः हमारा अस्तित्व संकट में होगा। इसके संरक्षण के लिए हमें सामूहिक प्रयास एवं समेकित प्रत्युत्तर की आवश्यकता है। मानव सभ्यता को बचाए रखने के लिए प्रकृति के साहचर्य में रहकर उसका संरक्षण करना होगा।

-हजारीबाग, झारखंड

किया प्रकृति का नाश

द्रौपदी साहू

देख धरा क्यों रो रही, बिलख बिलख कर आज।
हमको उसने सब दिया, हम हो सके न साज।।

काट दिए सब पेड़ को, करने को निर्माण।
तरसेंगे जब साँस को, छूटेगा तब प्राण।।

पेड़ कटा, मिट्टी कटी, और कटा ईमान।
जीव-जंतु, पर्वत कटे, कैसी प्रगति उड़ान !!

हर कोना दूषित किए, नदी-नहर अरु ताल।
कैसे जीवन बच सके, सबसे बड़ा सवाल ।।

हमने ही तो लोभवश, किया प्रकृति का नाश।
कदाचरण से खो गया, आपस का विश्वास ।।

सीना छलनी कर दिए, खोदे कई खदान।
भावी पीढ़ी के लिए, नहीं रहा कुछ ध्यान ।।

दहक रहा अंगार है, सागर करते शोर।
तड़पें जड़-चेतन सभी, धुआ-धुँआ हर ओर।।

प्रलय दिखायेगा हमें, भीम-भयंकर रूप।
हो जाएगा विश्व यह, जैसे अंधा कूप।।

इतना सब कुछ पास में, भरा हुआ है कोष।
और... और करता रहा, मिला नहीं संतोष।

-छुरी कला, कोरबा, छत्तीसगढ़

कुंडलिया छंद में प्रकृति चित्रण

□ सौम्या पाण्डेय 'पूर्ति'

साहित्यिक अवदान की समस्त विधाओं में छंद की विशेष महत्ता है, क्योंकि ये गेय होते हैं, जिनमें सरसता का समावेश होता है। काव्य कृति की गेयता उसकी शुद्धता पर निर्भर करती है जिससे कि उसे पढ़कर अथवा सुनकर मन स्वतः ही गुनगुनाने लगे। इस दृष्टि से कुंडलिया छंद अपनी रोचक लय एवं प्रस्तुति के कारण काव्य रचनाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इस विधा में शब्दों का समीकरण इतना सुंदर होता है कि बरबस ही मन आकर्षित कर लेता है।

फिर बात यदि प्रकृति की हो, तो कुंडलिया छंद में रची गईं रचनाएँ सृष्टि के सौंदर्य को द्विगुणित करने में समर्थ रहीं हैं। प्राकृतिक सुषमा के अदृतीय सौंदर्य बोध एवं भाव को कुंडलिया छंद की कृतियों में कई गणमान्य रचनाकारों द्वारा समाहित किया गया है जिनकी बानगी उनकी रचनाओं के माध्यम से देखते ही बनती है। उन्हीं रचनाओं में से कुछ विलक्षण रचनाएँ यहाँ उदधृत हैं, जो कि प्रकृति के विविध रंगों व प्रकृति के प्रति रचनाकारों की चिंता को दर्शाती हैं। सर्वप्रथम प्रकृति के सौंदर्य से ओतप्रोत छंदों का रसास्वादन करते हैं। इसी संदर्भ में शैलेंद्र शर्मा की सृष्टि के अनुपम रूप की आभा से अभिसिंचित कुंडलिया के माध्यम से प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव करते हैं-

नीला निर्मल जलधि-जल, रजत हिलोरें लोल।
स्वर्णिम सिकता तट बिछी, रहे नारियल डोल।।
रहे नारियल डोल, प्रकृति की सुषमा न्यारी।
होते आत्मविभोर, देखकर सब नर-नारी।।
कहते कवि शैलेन्द्र, देख यह स्वर्ग सजीला।
झुककर करता नमन, उदधि को अम्बर नीला।।

समुद्र को ही आधार बनाकर एवं अपनी ही सीमाओं में रहने को लेकर चेतावनी देते हुए एक छंद का अंश जो तारकेश्वरी सुधि जी के मनोभावों को व्यक्त कर रहा है, जिसमें नीर का सागर से संबंध का आधार उल्लिखित है-

सागर ने यदि नीर को, सिखलाया अनुबंध ।
लहरों की औकात क्या,तोड़ सकें तटबंध।।

सागर की बात हो तो नदियाँ कैसे पीछे रहें, अतः श्री श्लेष चन्द्राकर नदी के महत्व व उसके कारण आसपास फैली हरियाली व कोयल की कूक का वर्णन करते हैं-

बहती नदियां शान से, करती कलकल शोर।
दिखती पावस में सखे, हरियाली चहुँओर ।।

वर्तमान में कुंडलिया छंद के आधार स्तंभ व प्रमुख हस्ताक्षर श्री त्रिलोक सिंह ठकुरेला का नाम सबसे पहले मस्तिष्क में आता है। उनका रचना संसार विविध है उन्हीं में से मातृरूपिणि गंगा के महत्व को दर्शाती एक रचना का अंश यहाँ प्रस्तुत है-

केवल नदियां ही नहीं, और न जल की धार।
गंगा मां है, देवि है, है जीवन आधार।।

सावन का मौसम हो और सावन का पहला त्यौहार हरियाली तीज, जिसमें महिलाओं के सजधजकर झूला झूलने व गीत गाने की परंपरा है, उसी का वर्णन सुश्री अर्चना लाल ने, कुछ इस तरह से रेखांकित किया है- आओ झूमे हे सखी, है हरियाली तीज।

उस पर सावन की घटा, मौसम बड़ा अजीज।।

सावन के मदमस्त मौसम की व्याख्या में अन्य रचनाकारों ने भी कंजूसी नहीं की है, मुरारी जी के शब्दों में-

सावन आया झूम कर, छम-छम बरसे मेह।
महक उठी धरती प्रिये, पुलकित है पा नेह।।

इसी कड़ी में पंडित सत्य प्रकाश शर्मा तो सावन - भादौं माह के महत्व को श्री कृष्ण के जन्म से द्विगुणित कर रहे हैं-

सावन भादो माह में,बरखा ऋतु लगि जाय।
उगकर खरपतवार से,धरा हरी दिखलाय।।

सावन के मौसम के बाद जब सर्दियों के आगमन की प्रतीक्षा रहती है व ठिठुरती सर्दी सम्पूर्ण जगत को अपने आगोश में ले लेती है, तब भी रचनाएँ जन्म लेती हैं। उन्हीं की एक बानगी यहाँ प्रस्तुत है श्री राम नरेश रमन मोठ जी की रचना में जो कोहरे से उपजी उदासी को दर्शा रही है-

छाया चहुँदिश कोहरा, ओढ़े धरा लिवास।
बंधन में सब हैं बँधे, बेबस हुए उदास।।

सर्दियों के मौसम में गुनगुनी धूप का अपना अलग ही रोमांच होता है, जिसे शब्दों में पिरोया है, रामेश्वर प्रसाद गुप्त इंदु ने-

सर्दी का मौसम हुआ,धरती सजी अनूप।
रंग बिरंगे पुष्प से,बदल रही है रुप।।

वसंत को ऋतुराज अर्थात ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है, ऐसे में रचनाकारों की कलम भला कैसे मौन रह सकती है। जाड़े के बीतने के साथ वसंत के आगमन के उल्लास का सोटानंद जी ने बड़ी रोचकता से वर्णित किया है-

बीते सरदी शिशिर अब, आएंगे ऋतुराज ।
पंच तत्व पावन लगे,होंगे पावन काज ।।

सुश्री ऋता शेखर मधु ऋतुराज का स्वागत कर रहीं हैं-

स्वागत में ऋतुराज के,नाचें सखियाँ संग।
पीली पीली है फ़िज़ा, उड़े परागी रंग।।

छंद की बात हो तो वरिष्ठ रचनाकार राकेश चक्र जी भी कहाँ चूकने वाले हैं -

पक्ष शुक्ल है चैत का, गेहूँ पाका यार ।
कृषक देख मोहित हुआ, बम्पर पैदावार।

इन सबके अतिरिक्त भी कुंडलिया छंदों के माध्यम से लब्ध

प्रतिष्ठित रचनाकारों ने प्रकृति की अलग-अलग छटाओं का अतुलनीय वर्णन किया है, जिनमें से कुछ प्रमुख कुंडलियों के अंश यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ। श्री श्लेष चन्द्राकर ने ग्राम जीवन की मधुरता का वर्णन किया है -

बरगद पीपल नीम की, ठंडी-ठंडी छाँव ।
याद बहुत आता मुझे, अपना प्यारा गाँव ।।

होली के बाद जब गर्मी का मौसम आरंभ होता है तब उसमें लू का तड़का गर्मी को बदहाल बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ता, इसी भाव को सुश्री रश्मि प्रभा ने व्यक्त किया है-

लाल भभूका मुख हुआ, चढ़ा सूर्य को ताप।
धरा हुई बेहाल है, सागर उगले भाप,

गर्मी की बेहाली के मध्य जब बरसाती छीटें पड़ते हैं उस अवस्था में प्रकृति का वर्णन श्री हरिओम श्रीवास्तव द्वारा-

सूरज मुरझाया लगे, उठी घटा घनघोर।
करते कारे बादरा, उमड घुमड कर शोर।।

श्री महेंद्र वर्मा धीर की रचना में हरियाली-

हरे भरे हैं पेड़ ये ,हरे भरे ये बाग़।
सुन्दरता बिखरा रहे,चम्पा और गुलाब।।

ऋता शेखर मधु प्रकाश के सकारात्मक प्रभाव दर्शा रहीं हैं-

उगती जाती रौशनी, नित प्राची की ओर।
तम पर पा लेती विजय, बिना मचाये शोर।।

कुंडलिया छंद का ज़िक्र हो तो गिरिधर कविराय का नाम ही सबसे पहले मन मस्तिष्क में कौंध जाता है, एक बानगी -

रहिये लटपट काटि दिन, बरु घामे माँ सोय।
छाहँ न बाकी बैठिये ,जो तरु पतरो होय।।

इसी कड़ी में रामकली कारे का छंद भी प्रासंगिक है-

तुलसी पीपर नीम बर ,जुर मिल पेड़ लगाव ।
चलत सबो के साँस हा ,पर्यावरण बचाओ ।।

पर्यावरण को दृष्टिगत रखते हुए छत्तीसगढ़ के रचनाकार श्री महेंद्र देवांगन माटी जी ने भी अपनी चिंता जाहिर की है-

काटव झन अब पेड़ ला , जुर मिल सबे लगाव ।
मिलही सुघ्घर छाँव जी, पर्यावरण बचाव ।।
पर्यावरण बचाव , तभे गा गिरही पानी।
का सोंचत हव आज, करव झन आना कानी ।।
सुन माटी के बात , आदमी ला झन बाँटव ।
मिलही रस फल फूल, पेड़ कोनों झन काटव ।।

संत गंगादास जी महान विचारक व संत थे। उन का नाम भी कुंडलिया छंद में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। उनकी रचनाओं में पकृति का वर्णन मात्र सौंदर्य नहीं बल्कि जीवन की कटु सच्चाइयों से ओतप्रोत है, एक उदाहरण देखिए-

बोए पेड़ बबूल के, खाना चाहे दाख ।
ये गुन मत परकट करे, मनके मन में राख ।।

अंत में कुंडलिया छंद के एक और अनन्य सेवक शिवानन्द सिंह 'सहयोगी' जी, की प्रकृति व पर्यावरण पर कुछ रचनाओं के साथ ही इस आलेख को पूर्ण कर रही हूँ-

गरमी का आतंक है पग-पग चारोंओर।
दोपहरी है तड़पती चीख रहा मन-मोर।।
चीख रहा मन-मोर झुलसती शीतल छाया।
है दूषण का योग नहीं सूरज की माया।।
'सहयोगी' की सोच जुलाई देगी नरमी ।
सहें जून तक और पड़े जितनी भी गरमी।।

कुंडलिया विधा छंद विधा की एक विलक्षण पद्धति है, जिसके लिए प्रतिबद्ध रचनाकारों ने अपने विलक्षण सर्जन से इस अद्भुत लेखन शैली को जीवित रखा हुआ है, एवं अनवरत इसके उन्नयन के लिए प्रयासरत हैं। उनकी विलक्षणता को नमित करते हुए इस आलेख को लिखकर मैं स्वयं को धन्य मान रहीं हूँ, व कुंडलिया छंद की रचनाओं की उत्तरोत्तर वृद्धि व इसके सुदूर देशों तक प्रसार की कामना करती हूँ।

-नोएडा

बचाएं हम स्वयं को

मंजुला श्रीवास्तव

समझता नहीं है, मानव, मानव को
भरोसा नहीं है किसी पर, किसी को
सबकी है यहाँ, एक अलग सोच
और एक अलग रंग
शांति से रहता नहीं विश्व कभी
होते हैं परमाणु परिक्षण और युद्ध
हथियार, गोला बारूद के संग
कब तक सहेगी, प्रकृति
विनाश रचेगा एक कुचक्र
हम सभी के लिए,
नहीं इसमें भी कोई संदेह
अच्छी लगती है हमें प्रगति
दे रही है वह, जीवन को नई उमंग
परंतु बचना है जरूरी
अनावश्यक चीजों की क्रय से
करना हैं सदुपयोग संसाधनो का
क्योंकि प्रकृति हो रही है तंग
दिखलाती है अपना रौद्र रूप
कहीं बाढ़, कहीं सुखा
तो कभी भूस्खलन और भूकंप
क्योंकि प्रकृति माँगे सदा
सादा जीवन, उँचे विचार
बहुत अधिक ना सही
कुछ हद तक तो सही हो
हमारे जीवन जीने का ढंग ।

– नई दिल्ली

मानव मन लक्षित तो पर्यावरण सुरक्षित

डॉ. कविता मल्होत्रा

वतन की हरीतिमा का अर्थ बहुत व्यापक है लेकिन अगर मानव जाति को अपना कर्तव्य बोध हो जाए तो समूचे विश्व में बहारों का मौसम दस्तक दे सकता है। ज़रूरत है तो केवल अपने मन, वचन और कर्म में सामंजस्य स्थापित करने की।

ब्रह्मांड की सारी शक्तियाँ उन क्रियाकलापों पर अपनी कृपा दृष्टि बरसाया करतीं हैं जिनमें जन कल्याण की भावना निहित होती है। प्रकृति हमें दिन रात नि:शुल्क निस्वार्थता का ही सबक़ सिखाती है, जिसे हम सब नज़रअंदाज़ कर देते हैं। जब प्रकृति हमसे नाराज़ होकर हमें अपना रौद्र रूप दिखाकर सही राह पर लाना चाहती है तब भी हम मानवीय कृत्यों पर दोषारोपण करते हुए अपना क़ीमती वक्त ज़ाया कर देते हैं।

ये तो सच है कि प्राकृतिक आपदाओं को रोकने की सामर्थ्य तो किसी के पास नहीं है, लेकिन इन आपदाओं को उत्तेजना के स्तर पर पहुँचाने में समूची मानव जाति का हाथ है। किसी भी देश, समाज या व्यक्ति की तरक्की के रास्ते अगर किसी देश समाज या व्यक्ति की भावनाओं को कुचल कर गुज़रते हों तो उस तरक्की के सूरज को ग्रहण लग जाता है। अपने स्वार्थ के लिए नाजुक लताओं का संहार,अपनी बिल्डिंग के निर्माण के लिए फले फूले वृक्षों पर प्रहार, न केवल किसी भी मुल्क की हरियाली पर सचेत हमला है बल्कि एक सोचा समझा षड्यंत्र है जो नदियों की बौखलाहट का कारण भी है और सागर की बेचैनी का उदाहरण भी है।

वर्तमान समय में कई प्रश्न उभरते हैं जिनमें मुख्य हैं- पर्यावरण की सुरक्षा क्या केवल एक दिवसीय परिधि में सिमट कर कोई परिवर्तन ला सकती है? इसका सरल और सीधा सा जवाब है- सांसारिक अधिकार चाहिएँ तो कर्तव्यों को भी चाहा जाए। पर्यावरण तभी सुरक्षित रहेगा जब दायित्वों को निबाहा जाए।

जलवायु परिवर्तन -मानव जाति के समक्ष सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है जलवायु परिवर्तन, जिसका सीधा असर हमारे पर्यावरण पर पड़ रहा है। पृथ्वी के औसत तापमान में हो रही वृद्धि, जिसे ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं, मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन (कोयला, तेल, गैस) के जलने से निकलने वाली ग्रीनहाउस गैसों (जैसे कार्बन डाइऑक्साइड) के कारण हो रही है।

पर्यावरण पर प्रभाव- दुनिया में बढ़ते तापमान के गंभीर परिणाम सामने आ रहे हैं यथा- बर्फ पिघलना और समुद्र स्तर का बढ़ना। ध्रुवीय क्षेत्रों और ग्लेशियरों की बर्फ तेजी से पिघल रही है, जिससे तटीय क्षेत्रों के डूबने का खतरा बढ़ रहा है।

अतिवादी मौसम की घटनाएँ- सूखा, बाढ़, अत्यधिक गर्मी की लहरें और विनाशकारी तूफान अधिक बार और तीव्रता से आ रहे हैं।

जैव विविधता का नुकसान- बदलती जलवायु परिस्थितियों के कारण कई पौधे और जीव-जंतु अपने प्राकृतिक आवास खो रहे हैं, जिससे उनकी प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा बढ़ गया है।

जल संकट- कई क्षेत्रों में वर्षा का पैटर्न बदल गया है, जिससे पीने और खेती के लिए पानी की कमी हो रही है।

समाधान: इस संकट से निपटने के लिए तत्काल और सामूहिक कार्रवाई आवश्यक है। हमें नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों (सौर, पवन) को अपनाना होगा, वनों की कटाई को रोकना होगा, और कार्बन उत्सर्जन में भारी कटौती करनी होगी। प्रत्येक व्यक्ति को प्लास्टिक का उपयोग कम करके, ऊर्जा बचाकर और पौधे लगाकर इस दिशा में योगदान देना होगा। पर्यावरण की रक्षा करना और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करना ही भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और टिकाऊ ग्रह सुनिश्चित करने का एक मात्र मार्ग है।

-नई दिल्ली

धरती माता

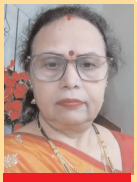

शशिप्रभा शाक्य 'शशि'

हमारी धरती माता हमको,
सब कुछ देती जीवन में।
हम उसको क्या लौटाते हैं,
यह सोचो अपने मन में।
तरह-तरह का जाल बिछाकर,
छलनी करते जा रहे हैं।
पेड़ काट- काट कर हम,
प्रहार करते जा रहे हैं।
पहाड़ों को चोटिल कर करके,
रूप बदल रहे धरती का।
कंक्रीट से पाट-पाट कर,
तन दाग रहे धरती का।
धरती की आजादी को हम,
भवन, इमारतों में बाँट रहे।
धरती माँ की कोख उजाड़ कर,
कई टुकड़ों में बाँट रहे।
धरती माँ ने कभी किसी से,
कोई उलाहना नहीं किया।
सारे घावों को सहती रहती,
उफ भी उसने नहीं किया।
हे मानव नादान ना बन तू,
इशारा उसका समझ भी ले।
नुकसान सदा ही तेरा है,
हे! मूरख अब तू जान भी ले।
इन आ रही आपदाओं पर,
थोड़ा सा विचार अब तू कर ले।
अभी नहीं कुछ बिगड़ा है,
सँभल जा और जतन कर ले ।
धरती माँ का मान भी रख तू,
माँ की ममता मिल जाएगी।
आने वाली हर विपदा भी,
पल में देखो टल जाएगी।

-भोपाल

पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन

वंदना सहाय

पृथ्वी ग्रह पर जीवन के अस्तित्व मे पर्यावरण की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। पर्यावरण शब्द, फ्रांसीसी शब्द एनवायरन से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है- आस पास।

पर्यावरण शब्द दो शब्दों के मिलने से बना है। पहला परि, यानि जो हमारे चारों ओर है और दूसरा आवरण, जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है, अर्थात पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ होता है- चारों ओर से घेरे हुए।

पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक और जैविक कारकों की समष्टिगत एक इकाई है, जो किसी जीवधारी या परतंत्र आबादी को प्रभावित करते हैं तथा उनके रूप, जीवन और जीविता को तय करते हैं। दूसरे शब्दों में, पर्यावरण वह है जो प्रत्येक जीव के साथ जुड़ा हुआ है और हमारे चारों ओर व्याप्त होता है। पारिस्थितिकी और पर्यावरण विज्ञान जीवन विज्ञान की शाखाएँ हैं, जो मुख्य रूप से जीवों के अध्ययन और जीवों और उनके पर्यावरण के बीच उनकी बातचीत से संबंधित है।

पारिस्थितिकी तंत्र पर्यावरण में मौजूद सभी जीवित और निर्जीव चीजों को संदर्भित करता है। सच कहा जाए तो यह जीवमंडल की नींव है, जो पूरे ग्रह पृथ्वी के स्वास्थ्य को निर्धारित करता है।

पारिस्थितिकी तंत्र के दो प्रमुख प्रकार हैं -

१.प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र- यह प्रकृति में पाया जाने वाला प्राकृतिक रूप से उत्पादित जैविक वातावरण है। इसमें रेगिस्तान, तालाब, जंगल, नदियाँ, महासागर, झीलें, घास के कृत्रिम मैदान, पहाड़ आदि शामिल हैं।

२.कृत्रिम परिस्थितिकी तंत्र-यह कृत्रिम वातावरण है, जो मुख्य रूप से बनाया और बनाए रखा जाता है। इसमें उद्यान, पार्क, एक्वेरियम, चिड़ियाघर और फसल के खेत आदि सम्मिलित हैं।

पर्यावरण के घटकों को मुख्य रूप से दो श्रेणियों में बाँटा गया है- जैविक पर्यावरण और अजैविक पर्यावरण।

जैविक पर्यावरण - सभी जीवित जीव जैसे कि जानवर, पक्षी, कीड़े, सरीसृप, जंगल और सूक्ष्म जीव (शैवाल, बैक्टीरिया, कवक, वायरस) आदि जैविक पर्यावरण में शामिल हैं।

अजैविक पर्यावरण- सभी निर्जीव घटक अजैविक पर्यावरण में शामिल हैं। जैसे- हवा, बादल, धूल, पहाड़, भूमि, नदियाँ, तापमान, आर्द्रता, जल, जलवाष्प, रेत आदि।

हर साल ५ जून को पर्यावरण संरक्षण दिवस, जिसे विश्व पर्यावरण दिवस भी कहा जाता है, मनाया जाता है। यह दिवस १९७२ में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा मानव पर्यावरण पर स्टॉक होम सम्मेलन के दौरान स्थापित किया गया था।

इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के बारे में लोगों में जागरुकता फैलाना तथा उन्हें कार्यवाई करने के लिए प्रेरित करना है। यह हर साल संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के नेतृत्व में मनाया जाता है और हर वर्ष इसका आयोजन अलग देश और अलग देश और अलग थीम के साथ होता है।

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम १९८६ में पर्यावरण की सुरक्षा और सुधार के लिए बनाया गया एक व्यापक कानून है। यह केंद्र सरकार को पर्यावरण प्रदूषण को रोकने और देश की विशिष्ट पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिए प्राधिकरण स्थापित करने का अधिकार देता है। इस अधिनियम के तहत, केंद्र सरकार को वायु, जल, मृदा और ध्वनि सहित सभी प्रकार के प्रदूषणों को नियंत्रित करने का अधिकार मिला है, साथ ही खतरनाक पदार्थों के उपयोग को भी नियंत्रित किया गया है।

इस अधिनियम के मुख्य प्रावधान और उद्देश्य को निम्नलिखित शीर्षकों द्वारा समझा जा सकता है-

पर्यावरण प्रदूषण को रोकना-इस अधिनियम का प्रमुख उद्देश्य पर्यावरण के सभी रूपों में प्रदूषण को रोकना तथा कम करना है।

प्राधिकरण की स्थापना- केंद्र सरकार को पर्यावरण की सुरक्षा और सुधार के लिए प्राधिकरण और विशेषज्ञ निकायों की स्थापना का अधिकार देता है।

औद्योगिक गतिविधियों का विनियमन-औद्योगिक गतिविधियों को विनियमित करने, उत्सर्जन मानकों को निर्धारित करने और अनुपालन की निगरानी करने का अधिकार देता है।

सुरक्षित मानक: पर्यावरण में प्रदूषकों की उपस्थिति के लिए सुरक्षित मानक निर्धारित करता है।

खतरनाक पदार्थों पर प्रतिबंध- केंद्र सरकार की पूर्व अनुमति के बिना खतरनाक पदार्थों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाता है।

अंतर्राष्ट्रीय समझौतों का कार्यान्वयन- अधिनियम संविधान के अनुच्छेद २५३ के तहत बनाया गया है, जो अंतर्राष्ट्रीय समझौतों को लागु करने के लिए कानून बनाने बनाने में मदद करता है।

अधिनियम का पालन न करने पर कारावास और/ या जुर्माने का प्रावधान है।

पृष्ठभूमि और महत्व: भोपाल गैस रिसाव अधिनियम को अक्सर १९८४ की भोपाल गैस रिसाव त्रासदी की प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाता है।

स्टॉक होम सम्मेलन- यह १९७२ के स्टॉक होम सम्मेलन के

सिद्धांतों को भारत में लागु करने के लिए भी एक महत्वपूर्ण कदम था।

जिम्मेदार कौन? पर्यावरण आपदाओं के लिए विभिन्न प्रकार की मानवीय गतिविधियाँ जिम्मेदार हैं। इनमें अम्लवर्षा, महासागरों का अम्लीकरण, जलवायु में परिवर्तन, वनों की कटाई, ओजोन परत का ह्रास, खतरनाक कचरे का निपटान, ग्लोबल वार्मिंग या वैश्विक तापमान वृद्धि, अत्यधिक जनसंख्या, प्रदूषण आदि सम्मिलित हैं।

जलवायु परिवर्तन -जलवायु परिवर्तन का सरल अर्थ है पृथ्वी के जलवायु में लंबे समय तक होने वाला वाला बड़ा और स्थायी बदलाव। उदाहरण के लिए- औसत तापमान में वृद्धि, मौसम के पैटर्न में बदलाव और गंभीर घटनाओं की संख्या में वृद्धि। यह मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन (कोयला, तेल, गैस) को जलाने जैसी मानवीय गतिविधियों के कारण होता है, जो वायुमंडल में ग्रीन हाउस गैसों को बढ़ाते हैं। इससे गर्मी फँस जाती है और पृथ्वी गर्म होती है। प्राकृतिक कारक जैसे ज्वालामुखी विस्फोट या सूर्य की गतिविधि में बदलाव भी इसमें भूमिका निभाते हैं, लेकिन वर्तमान बदलाव मुख्य रूप से मानव-जनित है। जलवायु परिवर्तन का मतलब सिर्फ एक दिन या साल के मौसम में बदलाव नहीं है, बल्कि यह दशकों से सदियों तक चलने वाला एक दीर्घकालिक बदलाव है। औद्योगिक क्रांति के बाद से कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधन को जलाने से ग्रीन हाउस गैसें जैसे कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन निकलती हैं। ये गैसें पृथ्वी के वायुमंडल में गर्मी को रोक लेतीं हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक ग्रीन हाउस काम करता है, जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ता है। यह औसत वैश्विक तापमान में वृद्धि ही वैश्विक ताप वृद्धि कहलाती है,जो जलवायु परिवर्तन का एक प्रमुख पक्ष है।

ज्वालामुखी विस्फोट, सौर चक्र में बदलाव जैसी प्राकृतिक प्रतिक्रियाएँ भी जलवायु में बदलाव लातीं हैं। लेकिन, ये वर्तमान परिवर्तनों के मुख्य कारण नहीं हैं तथापि जलवायु परिवर्तन के परिणाम गंभीर हैं। तापमान में वृद्धि के कारण लू, सूखा, बाढ़ और शक्तिशाली तूफान अधिक बार और गंभीर हो रहे हैं। ग्लेशियरों और बर्फ की चादरों के पिघलने से समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, जो तटीय समुदायों के लिए खतरा पैदा कर रहा है।

समुद्री पारिस्थितिक तंत्र पर गर्मी और अम्लीकरण का गंभीर प्रभाव पड़ रहा है और साथ ही कई जानवरों के आवास भी नष्ट हो रहे हैं। अत्यधिक गर्मी से मृत्यु दर बढ़ रही है।

सूखे और बाढ़ से फसलें प्रभावित होतीं हैं, जिससे खाद्य असुरक्षा बढ़ जाती है। मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियों का बढ़ते ताप से फैलने का खतरा बढ़ रहा है। बाढ़ और सूखे के कारण घर तथा आजीविका के नष्ट होने से गरीबी बढ़ने की आशंका रहती है। कई परिवारों को अपना घर छोड़कर विस्थापित होना पड़ रहा है। राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष के खतरे बढ़ सकते हैं।

निष्कर्ष- हम यह कह सकते हैं कि स्वस्थ जीवन और ग्रह पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व में पर्यावरण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पृथ्वी विभिन्न जीवित प्रजातियों का घर है और हम सभी भोजन, हवा, पानी और अन्य जरूरतों के लिए पर्यावरण पर निर्भर हैं। इसलिए हरेक व्यक्ति के लिए अपने पर्यावरण को बचाना और उसकी रक्षा करना महत्वपूर्ण है। आज पर्यावरण एक जरूरी सवाल ही नहीं, बल्कि ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है। लेकिन यह बड़े अफसोस की बात है कि इसे लेकर आज लोगों में जागरुकता की कमी देखी जा रही है। ग्रामीण समाज में तो बिलकुल ही नहीं, महानगरीय जीवन में भी इसके प्रति खास उत्सुकता नहीं देखी जा रही। इसका परिणाम यह हुआ है कि पर्यावरण सुरक्षा मात्र एक सरकारी एजेंडा बन कर रह गया है। पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के लिए पूरे समाज को जागरूक होना पड़ेगा, अन्यथा यह एक दूर का सपना ही बना रहेगा।

-नागपुर

कोहरे की चादर

शीला श्रीवास्तव

शरद ऋतु की आहटें आने लगी,
घर घर रजाइयाँ भाने लगी।
बच्चों को भी मानना है माँ की बात,
पहनो टोपा, स्वेटर,मोजा, मफ़लर हो तैयार।
शाला जाना है नहीं चलेंगे बहाने,
हमको माँ लगती थी समझाने।
आज माँ की याद आने लगी,
शरद ऋतु की आहटें आने लगी।
पीके जाना हल्दी वाला दूध
तन को गर्मी मिलेगी भरपूर।
शीत ऋतु की आहटें आने लगी,
पकवानों की सुगंध आने लगी।
धरती ने ओढ़ी कोहरे की चादर,
घास पर शबनम गिरे मोती बनकर।
रवि किरणें खेलतीं आंख मिचौली,
पुष्पों पर मंडरा रही भवरों की टोली।
अब दादा ,दादी रजाई ना छोड़ पाएंगे,
कड़क अदरक वाली चाय मंगवाएंगे।
जब निकलेगी भीनी भीनी धूप,
तब शीत लहर का आयेगा प्रकोप।
खाये जाएंगे मूंगफली, सूखे मेवे,
यह शीत लहर में तन को गर्मी देवें।
जगह-जगह जल जाएंगे अलाव,
मिलेगा ठंड से राहत पाने का लाभ।

– भोपाल

मनोरमा पंत

पिघलते ग्लेशियर

ग्लेशियरों के महत्व को जानने से पूर्व कुछ बातें समझना है। ग्लेशियर याने हिम की जमी हुई नदी। लगातार बर्फबारी से सघन होती जाती है और कम बर्फ गिरने से इनके अस्तित्व को खतरा हो जाता है। अंटार्टिका तथा ग्रीनलैंड में बड़े क्षेत्र में फैले हुए ग्लेशियर महाद्विपीय ग्लेशियर कहलाते हैं।

पहाड़ों में स्थित ग्लेशियर पर्वतीय कहलाते हैं जैसे आल्पस, हिमालय के ग्लेशियर, पहाड़ी घाटियों में स्थित ग्लेशियर जैसे गंगा, सिंध, ब्रम्हपुत्र की घाटियों के ग्लेशियर। गुरुत्वाकर्षण के कारण ये गतियान रहते है। प्रतिदिन कुछ सेंटीमीटर से भी कम गति से ग्लेशियर खिसकते हैं ।ग्लेशियर ऊपरी सतह से पिघलता है ,पिघलता पानी नीचे जाकर उसे खिसकने में सहायता करता है। आज दुनियाभर की चिंता है बढते तापमान के कारण ग्लेशियरों का तेजी से पिघलना ।आइए ,समझे ग्लेशियरों का बना रहना कितना जरुरी है ।

सभी ग्लेशियर मनुष्य के जीवन के लिये बहुत जरूरी है। विश्व की दस प्रमुख नदियाँ गंगा, सिन्धु, ब्रम्हपुत्र, इरावती, मैंकांग, सॉल्विन, तारिय, याग्तसे और हुआंगू ग्लेशियर से निकली है और एक विशाल जनसमुदाय का भरण पोषण करती है। इस प्रकार हम समझे कि पृथ्वी के कुल ताजे पानी का लगभग 75 प्रतिशत हिस्सा ग्लेशियरों से ही प्राप्त होता है। ग्लेशियरों के पूरी तरह पिघल जाने से दुनिया-भर में ताजे पानी का संकट पैदा हो जाएगा ।

यह संकट पहाडी शहरों में अभी से दिखाई दे रहा है ,जहां बर्फ बारी कम होने से ग्लेशियर जम नही पा रहे हैं।एक उदाहरण पश्चिम हिमालय का है जहां के कोलाहाई, शेक्सर और शेषराम ग्लेशियर 21 प्रतिशत तक पीछे हट गये हैं

सोचिए यदि इनके उद्गम स्थल ग्लेशियर ही पिघल गये तो इनके सूखने या पानी के कम होने से अरबों लोगो का क्या होगा। गंगा बेसिन में हिम आवृत्ति 24 प्रतिशत कम हो गई हैं जो विगत 23 वर्षों में सबसे कम है। यही हाल पूरे हिमालय क्षेत्र का हैं। ग्लेशियर पारिस्थिति तंत्र के संतुलन में अहं भूमिका अदा करते है। हिम की चिकनी सतह सूर्य की किरणों को परावर्तित करती है। इससे उस क्षेत्र का तापमान नियंत्रित रहता हैं। ग्लेशियर फाइटोप्लांकटन सूक्ष्म समुद्री शैवाली वृद्धि में सहायक होते है जो जलीय खाद्य श्रृंखलाओं का आधार है। इसी के कारण समुद्री जीव में विविधता रहती है। इसकी उपस्थिति मत्स्यपालन को भी प्रभावित करती है। तापमान बढने के कारण तीव्र गति से पिघलते ग्लेशियरों से नदियों का जलस्तर एकाएक बढ़ जाता है और वे बेकाबू होकर बाढ़ का कारण बन जाता है। सैकड़ों कृत्रिम झीलें बन जाती हैं जिनमें निरन्तर पानी की आपूर्ति होने से उनका विस्तार बढ़ता जाता है और वे कभी भी फटकर ढलानों पर बसे गाँवों को तबाह कर सकती हैं, जैसे कि पिछले वर्ष सिक्किम की ल्योनक झील के फटने से चुंगथांग बाँध टूट गया और उससे जनधन की भारी हानि हुई।

2013 में केदारनाथ त्रासदी में चाँगबाड़ी झील के जलस्तर भारी बारिश और बादल फटने के कारण बढ़ गया। झील की दीवारें टूट गई और भारी मात्रा में मलबा मन्दाकिनी नदी में आ गया जिससे हुई भयानक तबाही से आज भी सिहर जाते हैं।

मई 2025 के प्रथम सप्ताह में स्विटरलैंड में बिर्च ग्लेशियर टूटने से तबाह ब्लैटन का मलबा लोनजा नदी का मार्ग अवरूद्ध कर दिया और वहाँ एक कृत्रिम झील बन गई हैं जो कभी भी फट कर तबाही कर सकती है, इसीलिये आसपास के कई गाँव को एहतियातन खाली करा लिया गया है। बाढ़ वाली नदियां भारी मात्र में समुद्रों में जल छोड़ती है जिससे समुद्र की सतह ऊँची होती जा रही है,तटों का कटाव बढ़ रहा है और जकार्ता मुम्बई जैसे शहर डूबने की कगार पर आ रहे हैं।

याद रखें, ग्लेशियर पिघलने से पहाड़ों में भूस्खलन की घटनाएं तेजी से बढ रही हैं ।बादल अधिक फट रहे हैं और मैदानों में मौसम प्रणालियाँ चरम होने से एक ही दिन में भारी वर्षा हो रही हैं ,तूफान आ रहे हैं ,एवं विनाशकारी बारे आ रही हैं । ग्लेशियरों के महत्व/ और उनके पिघलने से हो रही हानियों को मद्देनज़र रखते हुए जरुरी है कि पूरी दुनिया ग्लेशियरों के प्रति गम्भीर होकर सोचे।

हम इतना तो कर ही सकते हैं कि अपने निजी प्रयत्नों से बढते तापमान में वृद्धि को रोके। वृक्षारोपण अधिक से अधिक करें, आसपास की हरियाली को सुरक्षित रखने में सहयोगात्मक रुख अपनाए, कार्बन डाई आक्साइड बढाने वाले उपकरणों का कम से कम उपयोग करें। -भोपाल

पर्यावरण के साथ दोगलापन

रति चौबे

देश में स्मार्ट सिटी के नाम पे स्मार्ट प्रकृति की स्मार्टनेस खत्म की जा रही है और राजनीति स्मार्ट हो रही है । हर न्यूज़ में प्रधानमंत्री, मंत्री हाथ में श्रृद्धानत हो पौधा लिए खड़े हैं। वाह क्या दोगलापन है बेचारी प्रकृति पर? पर्यावरण के नाम से लाखों करोड़ों रूपयों को बर्बाद हो रहे हैं, प्रकृति पे कहर टूट रहा है।

पांच जून पर्यावरण दिवस निश्चित कर दिया गया है। नियम का पालन भी सभी कर रहे हैं। नेता, अभिनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, संगठन पदाधिकारी,हाथ में हरित पौधा ले ईमानदारी से धरती मां की गोद में रोपण कर रहे हैं, प्रमाण के लिए कैमरामैन भी साथ, हाथ में पौधा निगाहें कैमरे पर वाह क्या दृश्य रहता है पर्यावरण दिवस का। मां धरती भी तनिक खुश हो ही जाती है कि यह पौधा लुप्त होगा कल पर आज तो है!

'हम भी मनावेगें पर्यावरण दिवस' कुछ संकल्पों को लेकर, पर खैर छोड़िए। आज बात करते है नागपुर के भारतवन की। कुछ दिन पहले छह हजार लोगों ने चैन बना वृक्षों की रक्षा हेतु प्रण लिया। हमने देखा आज तीस संगठन भारतवन रक्षा के लिए अपील कर रहे हैं - सेव भारतवन के लिए तीन दिन अर्जियां देने को बचे हैं?

मानव ही उसका काल बन गया है स्वार्थ में अंधा हो उसे ही श्रृंगार हीन कर रहा है, सुहागिन प्रकृति को विधवा बना रहा है। उसकी चीत्कार नहीं सुन रहा है यह क्रूर मानव यंत्रशक्ति पनप रही है। मानव सृष्टिकर्ता बन गए हैं ,धरा को रौंद रहे हैं, बाहुबली बन गए हैं,राजनेता बन गए हैं। दरअसल ये भटक गए हैं,मानवता पर अनाचार कर रहे हैं । धरती के देवता बन बैठे हैं?

बजंर भूमि क्या देगी? कल आने वाली पीढ़ी प्रश्न करेगी, पक्षी विहीनधरा छांव देने तरसेगी ,इंसा भी कहीं ठौर ठूढेगा,कैवल मात्र कंकालों का नृत्य होगा,क्योंकि आज इंसान सभ्यता के शिखर पे पहुंचने की लालसा में प्रकृति को ही ध्वस्त कर रहा है। हरितिमा ही नष्ट हो जावेगी यदि प्रकृति के साथ दोगलापन होता रहा। मेरा स्पष्ट कथन है- पर्यावरण के नाम पे मत बिको, पर्यावरण की रक्षा करो, दिखावा ना करो। भोली जनता को मत लूटो । यदि यह सब होने दिया तो कुछ दिनों बाद थम जावेगी कलकलाती नदियां, बंजर होंगे पोखर- तालाब, लुप्त होगा झरनों का संगीत, कूपों पे मंडरावेगे भूत, गूंजेगा बस मानव-दानव अट्टाहास?

- नागपुर

प्रकृति के साथ छेड़छाड़

मनोज चतुर्वेदी 'आनंद'

जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण प्राकृतिक संसाधनों के साथ अनियंत्रित छेड़छाड़ है। विकास की दौड़ में पर्यावरण को सबसे अधिक क्षति पहुंचाई जा रही है। बढ़ती वनों की कटाई, पहाड़ों की खुदाई, नदियों-तालाबों का दोहन — इन सभी ने प्रकृति के संतुलन को गहराई से प्रभावित किया है। परिणामस्वरूप मौसम असामान्य रूप से बदलने लगा है; बे-मौसम बारिश, अनियमित ठंड और अत्यधिक गर्मी जैसे बदलाव आम हो गए हैं। ऋतुओं का क्रम भी लगातार असंतुलित हो रहा है।

प्राकृतिक स्थलों को पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित करने की होड़ में ऐसे परिवर्तन किए गए, जिनसे अनेक आपदाएं उत्पन्न हुई। इसके कारण हजारों लोगों की जान गई, कई शहर उजड़ गए, पर फिर भी लोगों में जागरूकता और सुधार की कमी दिखाई देती है।

पर्यटन को बढ़ावा देना बुरा नहीं है, लेकिन उसके लिए ऐसे कदम नहीं उठाए जाने चाहिए जो पर्यावरण को क्षति पहुंचाएं। जब-जब पर्यावरण प्रभावित होता है, उसकी कीमत जनजीवन को चुकानी पड़ती है।

अत्यधिक वर्षा से पहाड़ ढह जाते हैं, बर्फ के पहाड़ टूटकर गिरते हैं, और कई क्षेत्रों में पानी की भारी कमी के कारण लोगों को पलायन तक करना पड़ता है। बढ़ता प्रदूषण भी जलवायु परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है। सार्वजनिक परिवहन की सुविधाएँ घटने के कारण लोग निजी वाहनों का अधिक उपयोग करते हैं, जिससे ईंधन-जनित प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है।

ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि कानूनी और सामाजिक स्तर पर सशक्त पर्यावरण नीति बनाई जाए और उसके क्रियान्वयन के लिए गंभीर प्रयास किए जाएँ। पर्यावरण, जीव-जंतु और मानव—सभी के कल्याण के लिए जलवायु परिवर्तन को रोकना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। समय रहते शासन और आम जनता दोनों को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाने चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी सुरक्षित रह सके।

- भोपाल

पर्यावरण : अभी नहीं तो कभी नहीं...

(न्यूज़ीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और प्रवासी
ारतीय समुदाय के संदर्भ में)

डॉ. सुनीता शर्मा

धरती केवल मिट्टी, जल और आकाश का मेल नहीं, यह हमारा साझा घर है। यह वही घर है जिसमें हम जीते हैं, हमारे पूर्वजों की स्मृतियाँ संजोई हैं, और हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी अपने भविष्य के सपने देखेंगी। आज मानव के विकास की अंधी दौड़ ने इस घर को खतरे में डाल दिया है। जलवायु परिवर्तन, तापमान वृद्धि, प्रदूषण, वन-क्षरण और जैव-विविधता का क्षरण केवल आंकड़े नहीं हैं, यह चेतावनी हैं—सुनिए, अभी नहीं तो कभी नहीं..।

धरती मां का हर स्पर्श है अनमोल,
हमारी संवेदनाएँ बनें उसका बोल..।

प्रकृति-प्रेम और संरक्षण का मॉडल-न्यूज़ीलैंड

यह देश अपनी अद्भुत जैव-विविधता, हरित परिदृश्यों और स्वच्छ वातावरण के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी नीति नहीं, बल्कि नागरिक संस्कृति का हिस्सा है। देश Net Zero 2050 (नेट जीरो)का लक्ष्य पूरा करने की दिशा में अग्रसर है, और (जीरो वेस्ट कम्युनिटीज) शून्य-कार्बन उत्सर्जन लक्ष्य की अवधारणा तेजी से बढ़ रही है। नदियों, झीलों और पर्वतों को कानूनी 'व्यक्ति-अधिकार' देने का निर्णय विश्व में अनोखा है।

माओरी समुदाय का कैतीकितांगा अर्थात धरती की संरक्षकता—यहाँ के पर्यावरण-दर्शन की रीढ़ है। भूमि, जल और वायु को पवित्र माना जाता है, और बच्चे यह सीख बचपन से ही परिवार, समुदाय और स्कूलों में आत्मसात करते हैं-

हर वृक्ष, हर पत्ते में है जीवन का गीत,
हवा में घुला है जैसे प्रकृति का संगीत..!

चुनौती और जागरूकता

पर्यावरणीय संकटों का सीधा सामना करता देश है ऑस्ट्रेलिया —बुशफायर, चरम मौसम, समुद्री तापमान वृद्धि और कोरल रीफ का क्षरण यहाँ की वास्तविकता है। परन्तु इन चुनौतियों ने ऑस्ट्रेलिया को और अधिक जागरूक बनाया है।

- रिन्यूअबल एनर्जी में तेजी से निवेश
- प्लास्टिक के उपयोग में नियंत्रण
-ग्रेट बर्रिएर रीफ के संरक्षण की योजनाएँ

इंडिजेंस अबोरिजिनल कम्युनिटीज का प्रकृति-आधारित जीवन दर्शन

अबोरिजिनल संस्कृति में कंट्री केवल भूमि नहीं, बल्कि आत्मा, इतिहास और पूर्वजों से जुड़ा जीवंत अस्तित्व है। संरक्षण उनके लिए केवल नीति नहीं, आस्था है।

बचपन से पर्यावरण-चेतना अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन में अनुभव आधारित शिक्षा

न्यूज़ीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन केंद्रों में बच्चों को बचपन से ही पर्यावरण-संवेदनशील बनाया जाता है। यह केवल शिक्षा नहीं, बल्कि अनुभव से सीखने का तरीका है।

बच्चों को प्रतिदिन पौधों को पानी देना, मिट्टी से खेलना, हिलाना, कचरा अलग करना और रीसायकल करना सिखाया जाता है। गार्डनिंग बागवानी सीख, कम्पोस्ट बनाना,प्रकृति भ्रमण जैसी गतिविधियाँ उन्हें प्रकृति के प्रत्येक तत्व से जोड़ती हैं—पत्ते, मिट्टी, कीट, जल और आकाश से क्यूंकि -

छोटे कदम, बड़े बदलाव का आधार बनते हैं,
बच्चों की मुस्कान में छुपा है सीखने का राज..!

डिजास्टर ड्रिल्स (आपदा सुरक्षा अभ्यास)- इन देशों में बच्चों को आपदा-प्रबंधन की शिक्षा डराकर नहीं, बल्कि नियमित अभ्यास द्वारा दी जाती है।

फायर ड्रिल -अग्नि-सुरक्षा अभ्यास
अर्थक्वेक ड्रिल- भूकंप सुरक्षा अभ्यास
लॉकडाउन ड्रिल- लॉकडाउन सुरक्षा

टर्टल-सेफ़ मुद्रा (आपदा की स्थिति में कछुए जैसी सुरक्षा मुद्रा अपनाना) फायर ड्रिल, अर्थक्वेक ड्रिल, फ्लड सेफ्टी) नियमित रूप से कराए जाते हैं। ये अभ्यास बच्चों में सुरक्षा, आपदा-प्रबंधन और पर्यावरणीय जोखिमों की समझ विकसित करते हैं। यही नहीं वर्तमान में टर्टल सेफ वाइल्डलाइफ सेफ और ओसन सेफ जोनस जैसी गतिविधियाँ भी बच्चों की दैनिक शिक्षा में शामिल हैं। यह उन्हें सिखाती हैं कि समुद्र, तट और जंगल केवल खेलने की जगह नहीं, बल्कि जीव-जंतु का घर हैं, और उनके संरक्षण में हमारी जिम्मेदारी है। उदाहरण बीच पर कचरा न फेंकें, समुद्र में प्लास्टिक न डालें, कछुओं और पक्षियों के रास्ते में बाधा न डालें। न्यूज़ीलैंड और ऑस्ट्रेलिया में Turtle-safe या wildlife-safe प्रोजेक्ट्स अक्सर स्कूलों और समुदायों

में शामिल होते हैं रोज़ाना एक्टिविटीज़ के हिस्से के रूप में। बच्चे अनुभव से सीखते हैं। यह उन्हें सिर्फ environment-friendly ही नहीं, बल्कि उत्तरदायी नागरिक भी बनाता है। सिर्फ पौधे लगाना, रीसायकल करना या जल बचाना ही नहीं, बल्कि Turtle-safe और wildlife-safe गतिविधियाँ बच्चों में जैव-विविधता के प्रति सम्मान और सुरक्षा का भाव विकसित करती हैं। ये अभ्यास उन्हें यह सिखाते हैं कि हर जीव—चाहे कछुआ हो, पक्षी हो या समुद्री जीवन—धरती के हिस्से हैं, और उनका जीवन हमारे निर्णयों पर निर्भर करता है..

गार्डनिंग से सीखें हम सब संवेदना,
टर्टल सेफ वाइल्डलाइफ सेफ हो जीवन की रचना..!

स्वतंत्रता और जिम्मेदारी की शिक्षा

जब बच्चे छोटे-छोटे निर्णय लेने लगते हैं—जैसे अपने पौधों की देखभाल करना, कचरे को अलग करना, सुरक्षा ड्रिल्स में भाग लेना—तो वे अनुभव से सीखते हैं। यह उन्हें इंडिपेंडेंट बनाता है। निर्णय लेने और उसके परिणाम को समझने से उनका स्मरण, सोचने और निर्णय क्षमता विकसित होती है। धीरे-धीरे ये आदतें उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाती हैं—जो समाज, पर्यावरण और स्वयं के प्रति सजग और संवेदनशील होते हैं। मुझे लगता है छोटे कदमों से बनता है बड़ा पथ। अनुभव की रोशनी से होता है मन- मंथन..! बच्चों की मुस्कान में छुपा है सीखने का राज। यही बनाता उन्हें जीवन में सच्चे नागरिक। सशक्त और जिम्मेदार...।

प्रवासी भारतीय समुदाय- संस्कार और संस्कृति का योगदान

न्यूज़ीलैंड और ऑस्ट्रेलिया में रहने वाला भारतीय समुदाय पर्यावरण-संवेदनशीलता को बच्चों में जीवित रखता है। भारतीय संस्कृति में नदियाँ, वृक्ष, अग्नि और वायु सदियों से पूजनीय रही हैं।

तुलसी रोपण और घर के छोटे-छोटे गार्डन। जल संरक्षण और ऊर्जा बचत। भोजन का सम्मान। अपशिष्ट कम करना और रीसायकल करना। पौधों और पशुओं के प्रति करुणा। ये परंपराएँ बच्चों में नैतिकता और पर्यावरणीय जागरूकता विकसित करती हैं। प्रवासी परिवार स्थानीय नीतियों और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का सुंदर समन्वय कर समाज में सकारात्मक योगदान देते हैं।

वैश्विक संकट और चेतावनी

आज विश्व निम्न संकटों का सामना कर रहा है। महासागरों में माइक्रोप्लास्टिक का फैलाव। वैश्विक तापमान में औसत 1.5°C वृद्धि। वन-क्षरण और भूमि अपरदन। अनियमित वर्षा और चरम मौसम। लाखों जीव-जंतु प्रजातियों पर संकट।

मुझे लगता है नदियाँ हमें सिखाती हैं धैर्य का मर्म,
तो सागर कहता है— सुरक्षित करो अपना कर्म..!!

अभी नहीं तो कभी नहीं—हर कदम महत्वपूर्ण है। हर छोटी आदत, हर जिम्मेदारी, हर शिक्षा आज से शुरू होनी चाहिए। यही भविष्य को सुरक्षित करने का मार्ग है।

व्यक्तिगत और सामुदायिक संकल्प

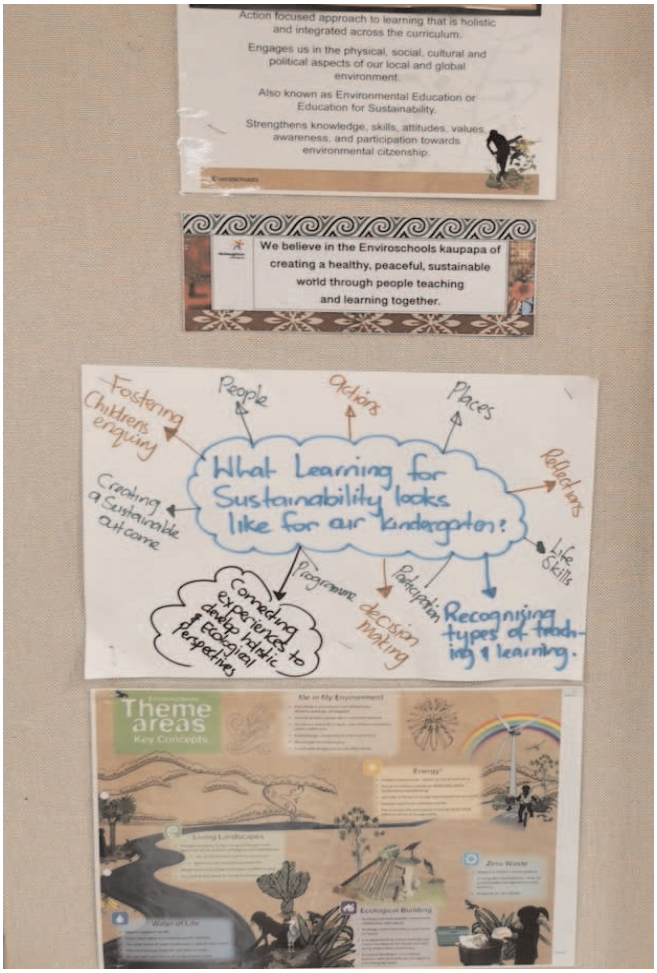

पर्यावरण संरक्षण केवल बड़ी योजनाओं का विषय नहीं है। यह हमारे रोज़मर्रा के निर्णयों से शुरू होता है-प्लास्टिक का कम उपयोग, रीसायकल और पुन: प्रयोग, ऊर्जा और जल की बचत, पेड़ लगाना और उनकी देखभाल, टर्टल सेफ फॉर वाइल्डलाइफ सेफ गतिविधियों में भाग, घर और समुदाय में बच्चों को प्रकृति-सम्मान की शिक्षा आदि छोटे-छोटे कदम बच्चों में आदत और जीवन-मूल्य का निर्माण करते हैं।

चेतना और भविष्य का संदेश- धरती हमारी विरासत नहीं, वह आने वाली पीढ़ियों का अधिकार है। न्यूज़ीलैंड और ऑस्ट्रेलिया की प्रकृति-केंद्रित नीतियाँ, माओरी और एबोरिजिनल दर्शन, भारतीय संस्कृति के पर्यावरणीय मूल्य, और अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन में प्रकृति-आधारित शिक्षा—ये सभी दुनिया को एक ही संदेश देते हैं- अभी नहीं तो कभी नहीं.., पर्यावरण की रक्षा केवल कर्तव्य नहीं, यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है..।

आइए, हम सभी मिलकर एक ऐसी दुनिया गढ़ें जहाँ हवा स्वच्छ हो, नदियाँ निर्मल हों, जंगल जीवित हों, समुद्र सुरक्षित रहे, और बच्चे मुस्कुराते हुए कह सकें—

हम अपनी धरती से प्रेम करते हैं,
और उसकी रक्षा हमारा संकल्प है..।

संवेदनाओं की फुलवारी 'बच्चे होते फूल से'

'अनंत आलोक ' भोपाल निवासी गीतकार मनोज जैन 'मधुर' के बाल काव्य संग्रह 'बच्चे होते फूल से' की कविताओं की रंग बिरंगी फुलवारी से गुजरते हुए यूं लगा कि मानो मैं खुद अपना बचपन एक बार फिर से जी रहा है।

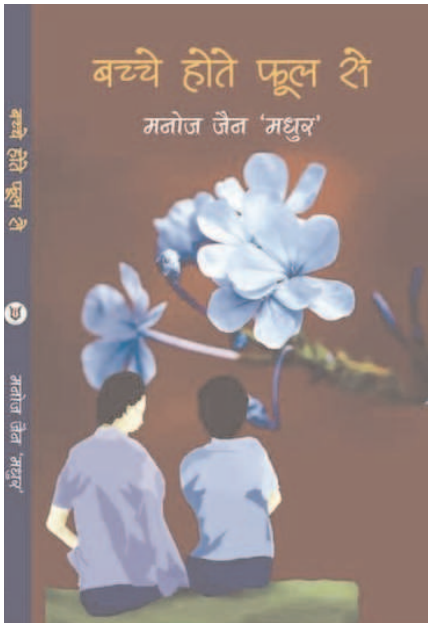

अपने बचपन के हर मोड़ से गुजरना अपने आप में कितना खूबसूरत एहसास है, ये राही भी महसूस ही कर सकता है, सही सही बता नहीं सकता। काश ऐसा संभव हो कि हर कोई जब जी चाहे अपने बचपन से गुजर सके और जब जी चाहे तो वापस अपनी वास्तविक अवस्था में प्रवेश पा सके। काश! ऐसा करिश्मा कर दे ये ए. आई.! ए.आई. करे न करे, लेकिन एक कवि एक लेखक एक कथाकार की साधना में वह ताकत होती है, और वह चाहे तो ऐसा संभव कर सकता है। वह जब चाहे उस स्तर तक जा पहुंचता है, जहां श्रोता कहने को मजबूर हो जाता है कि जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि। लेकिन क्या ये परकाया प्रवेश यूं ही संभव हो पाता है! नहीं, इसके लिए लंबी साधना की जरूरत होती है।

इस काव्य संग्रह की बाल कविताओं ने ये साबित कर दिया है कि एक साधक, एक समर्पित लेखक जब चाहे तब बचपन में उतर सकता है और जब चाहे तब वापस भी आ सकता है। संग्रह की शब्द फुलवारी में अलग-अलग रंग के कुल तैतालीस फूल लहलहा रहे हैं जिनकी सुगंध और दर्शन नयन और कर्ण मार्ग से ग्रहण करते हुये आनंदित हुआ जा सकता है।

शीर्षक बाल गीत से शुरुआत करूं तो यह गीत हर एक अध्यापक, हर माता-पिता अभिभावक को जरूर पढ़ना चाहिए। पढ़ना ही नहीं चाहिए, हर घर, हर कक्षा कक्ष की दीवार पर लगा देना चाहिए। पाठ्य पुस्तक में आ जाए तो सोने पर सुहागा। इतना प्यारा गीत है कि तीन अंतरों में सब कुछ समेट दिया है कवि ने, एक बानगी देखिए-

बच्चे होते फूल से, आंख दिखाओ मुरझा जाते, प्यार करो खिल जाते हैं। मन के सारे भेद भुला कर, आपस में मिल जाते हैं। मन होता है इनका कोमल, इन्हें न डांटो भूल से। बच्चे होते फूल से।

बाल मन को गीति काव्य अधिक पसंद आता है और उसमें भी यदि कोई कथा कह दी जाए तो याद भी रहता है और कोई सौख भी मिल जाती है। चौपाई छंद में मातादीन की ऐसी कथा बुनी की आनंद आनंद में बच्चा गाता जाए और एक से दस तक की गिनती भी सीख जाएं। ये कविता छोटे बच्चों के लिए अधिक उपयोगी साबित हो सकती है। एक बानगी देखिए एक गांव में घर दो तीन आकर ठहरे मातदीन इन ने पाले घोड़े चार घूम लिया सारा संसार।

यदि इतने ही अंश पर ध्यान दें, तो आप पाएंगे कि मातादीन के लिए सर्वनाम उसने अथवा इसने भी किया जा सकता था लेकिन यही कवि को सजगता देखिये, इन ने का प्रयोग किया गया है, जो सम्मान जनक है। अपने से बड़ों का सम्मान करना व्यवहार से ही सिखाया जा सकता है।

'एक बोध कथा का भावानुवाद' कवि का बाल काव्य में नूतन प्रयोग है। एक समय था जब पंचतंत्र की कथाओं से सीख देने का चलन था। बच्चे उस से आकर्षित भी खूब होते थे।

हिमप्रस्थ राह पर चलते हुये टीवी ने बच्चों के लिए, जानवरों को पात्र बना कर कार्टून के माध्यम से बांधने का सफल प्रयास किया लेकिन विद्यालय में अथवा किताबों से बच्चा फिर से जुड़े इसके लिए इसी तरह के प्रयास की आवश्यकता है जैसी यहां कवि ने की है। इस शीर्षक के अंतर्गत भाग एक और भाग दो के रूप में कवि ने सार छंद में तोतों को पात्र बनाकर महत्त्वपूर्ण सीख, रुचिपूर्ण ढंग से बच्चों तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

'चूना नहीं लगाना' भी एक अच्छी कविता है, थोड़ी लम्बी और व्यंजनात्मक है लेकिन बच्चे आनंद लेकर पढ़ सकते है। भालू बच्चों और बाल साहित्यकारों का प्रिय पात्र रहा है। एक रोज गुमटी पर आकर बोला- भालू काला चौरसिया जी पान बना दो हमें बनारस वाला। इसमें नहीं डालना बिल्कुल जर्दा और सुपारी। सेवन से हो जाता इसके अपना तो सर भारी।

दूसरे अंतरे में नशे से बचने की हिदायत है, लेकिन पान मसाला से भी बचना चाहिए। बहरहाल अब पान वान के जमाने वैसे भी कहां रहे अब। एक इतिहास इसके माध्यम से जरूर पढ़ाया जा सकता है, बच्चों को।

'बड़ी बुआ' एक भावभूमि के लिहाज से और रिश्तों संभाल के लिहाज से एक बेहतरीन कविता है। रिश्तों के कैनवास पर बुआ, बच्चों का सबसे प्रिय पात्र है। इसे एक जरूरी कविता कहूंगा। आप भी एक दो बंध देखिए- घर आई है बड़ी बुआ, आज बनेगा मालपुआ। ओढ़ रखा पश्मीना, शॉल लगती हैं कश्मीरी, डॉल होठों पर बिखरी, मुस्कान चबा रही हैं मीठा पान। चांदी जैसे खिचड़ी बाल, फूले फूले लटके गाल। सर पर हाथ फिरा पूछा, कैसा है मेरा बबुआ ? ये जो सर पर हाथ रखना है

और प्यार से पूछना, कैसा है मेरा बबुआ? ये एक पूरी संस्कृति है जो धीरे-धीरे हैलो बुआ, हाय बुआ में, हैलो बेटा में बदल रही है। बुआ बुआ बूढ़ी है सो उसके संस्कार में अभी सर पर हाथ फिराना बाकी है।

हिन्दी को चाहिए था कि सर पर हाथ फिरना को, मुहावरे के रूप में दर्ज करें। इसी तरह, इस गीत के मुखड़े की पूरक पंक्ति को देखें तो मालपुआ भी गांव की संस्कृति है। इस गीत के अंतरों के पूरक समांत पर ध्यान दें तो मालपुआ, बबुआ, कछुया, महुआ, अहा। ये समान्त केवल शब्द भर नहीं है। समवेदनाओं के भरे पूरे स्त्रोत हैं। ऐसे स्त्रोत जहां से रिश्तों को बचाने के सूत्र निकलते हैं, जहां से निकलती है प्यार मुहब्बत और अपने पन की गंगा। हमारे बाल साहित्यकारों ने मुंशी प्रेमचंद की ईदगाह के बाद शायद ही कहीं रिश्तों को बचाने पर ध्यान दिया हो। यही कारण है कि आज प्रगतिवाद के नाम पर हम अपनों से दूर होते चले जा रहे है। जब तक हमें पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। विभिन्न शिक्षाओं और मूल्यों को बचाने के साथ-साथ रिश्तों को बचाने और, और अधिक मजबूत करना इस संग्रह का हासिल कहा जा सकता है।

सार छंद में एक और कविता पर ध्यान ठहर जाता है- दिल्ली पुस्तक मेला- लेकिन ये कविता छोटे बच्चों के स्टार से ऊपर चली गई है। यहां बेशक बच्चों के प्रिय पात्रों को लेकर पुस्तक मेले की बात की गई है। पुस्तक मेले के बारे में और उसके प्रति आकर्षण पैदा करने के लिए यह कविता उपयुक्त हो सकती है लेकिन, इसके भावों को लेकर छोटे बच्चों की समझ इतनी विकसित नहीं मानी जा सकती। बड़ों के लिए इसे अच्छा व्यंग्य माना जा सकता है।

संग्रह की हर एक कविता, गीत, लोरियां, पहेलियां, अपने आप में महत्त्वपूर्ण और उपयोगी है, उल्लेखनीय है जिसके लिए आपको संग्रह से खुद गुजरना होगा। गुड़ को खुद खाए बिना उसका रस नहीं लिया जा सकता। तो खाएं और रस लें।

अंत में, कवि को बधाई देते हुए कहूंगा कि आपका यह कार्य संग्रहणीय तो है ही, पठनीय भी है। चिंतन करने योग्य है और इसे बच्चों के बीच पहुंचाने की आवश्यकता है। मैं स्वयं आपकी इस अमूल्य भेंट को अपने विद्यालय के पुस्तकालय में ले जाकर छात्र-छात्रों को पढ़वाऊंगा।

उम्मीद करता हूं, संवेदनाओं को फुलवारी में खूब फूल आएं, भरपूर महके और फले फूले। कवि को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। ददाहू जिला सिरमौर, हिमाचल प्रदेश स्थित प्रकाशक साहित्यालोक को भी बधाई।

-समीक्षा/अनंत आलोक

रहा न पर्यावरण सुनहरा

कृष्ण देव चतुर्वेदी, भोपाल

प्रकृति नयन अब दिखती सूनी, लख सूरज का खेल।
आँखें देखें आँख मनुज की, नहीं रहा वह मेल।।

वट पीपल की आँहें रोती,
घटता जंगल आज।
नीम बबूल खैर को छोड़ा,
कृत्रिम हुआ समाज।।

तपकर कहता सूर्य गगन का,घर भी लगता जेल।
आँखें देखें आँख मनुज की,नहीं रहा वह मेल।।

रहा न पर्यावरण सुनहरा,
बना न साथी खेत।
इधर-उधर झूठी बातें,
फैली सुखी रेत ।

इस दावन में बैल नहीं है ,अपने मन को झेल।
आँखें देखें आँख मनुज की,मानव मन का मेल।।

पेड़ काट फर्नीचर गढते,
मन को करके काठ।
मानस पूजा गौड़ हुई अब
पढ़ते झूठा पाठ।

बदल गई दिनचर्या सारी, दिखे जुआ का खेल।
आँखें देखे आँख मनुज की, मानव मन का मेल।।

दिल्ली दूषित नदियां दूषित,
दूषित दिखता ताल।
बढा प्रदूषण मन मानव का,
षड्यंत्रों का जाल।

रहा न पर्यावरण सुनहरा, नहीं रही वो बेल।
आँखें देखें आँख मनुज की,मानव मन का मेल।।

आस्था छोड़ी इन पेड़ों से,
पीपल तुलसी पांव।
टिकिया खाता आज दवा की,
यहां वहां हर गांव।

तोड़ा रिश्ता इन पेड़ों से, दिखता यहां अकेल।
आँखें देखें आँख मनुज की, मानव मन का मेल।।

जरूरत है पर्यावरण अनुकूलता की

सरस्वती मल्लिक

पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत एक इकाई है जो किसी भी जीवधारी और पारितंत्रीय आबादी को प्रभावित करे।

पर्यावरण धरती पर मानव सहित सभी जीवों के अस्तित्व का आधार है। जो जिस पर्यावरण में पलता है उसकी शारीरिक संरचना भी उसी के अनुकूल हो जाती है। जो प्रजाति अपने पर्यावरण के अनुकूल स्वयं को नहीं ढाल पाती, समय के साथ उसके अस्तित्व का विनाश हो जाता है।

पर्यावरण शब्द सामान्यतया पृथ्वी की हवा, पानी, मिट्टी, वनस्पति, वन्य जीवन और अन्य जीवित प्राणियों के समूह को संदर्भित करता है। पर्यावरण न केवल प्राकृतिक संसाधनों की संरचना करता है, बल्कि यह जीव-जंतुओं और मनुष्यों के बीच के जटिल संबंधों को भी निर्धारित करता है। इसके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती।

आज पूरे विश्व में पर्यावरण की स्थिति बेहद चिंताजनक है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, वनों की कटाई और आधुनिक जीवनशैली ने पर्यावरण को गंभीर संकट में डाल दिया है। वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और अन्य ग्रीनहाउस गैसों की अत्यधिक वृद्धि के कारण धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है, जिसे हम 'ग्लोबल वार्मिंग' के रूप में जानते हैं।

तीव्र उष्मा से हिमनद पिघल रहे हैं, समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है, और मौसम चक्र में अनियमितताएँ उत्पन्न हो रही हैं। आज ध्वनि प्रदूषण भी एक बहुत बड़ी समस्या बनकर हमारे सामने खड़ी है। तीव्र स्वर में ध्वनि विस्तारक यंत्र के साथ डीजे बजाना लोग अपनी शान समझने लगे हैं। कोई भी पारिवारिक या सामाजिक आयोजन हो लोग इसका प्रयोग अवश्य करते हैं। दिन का चैन और रात की नींद हराम रहती है। मन मस्तिष्क तथा कान सभी रोगग्रस्त हो रहे हैं। जो पहले से ही हृदय रोग से ग्रस्त हैं उनके जीवन पर मौत का साया हमेशा मँडराते रहता है। सरकार ने इसके विरुद्ध कानून बनाए हैं लेकिन उसकी परवाह किसी को नहीं।

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव न केवल पर्यावरण पर, बल्कि समूची मानवता पर पड़ रहा है। बढ़ते तापमान और सूखे के कारण कृषि उत्पादन पर असर हो रहा है। कई प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं, जबकि कई स्थानों पर जल संकट गहराता जा रहा है।

समाधान के प्रयास -

पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान करना अत्यंत आवश्यक है और इसके लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है।

पुनरुपयोग और पुनर्चक्रण-

प्लास्टिक और अन्य वस्तुओं का पुनरुपयोग और पुनर्चक्रण करके हम कचरे को कम कर सकते हैं। इससे पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में मदद मिलेगी।

वन संरक्षण-

वनों की कटाई को रोकने और नए पेड़ लगाने के प्रयासों को प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर नियंत्रित होगा और जैव विविधता की रक्षा होगी।

स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग-

हमें कोयला, पेट्रोल और डीजल जैसी प्रदूषक ईंधनों का उपयोग कम करके सौर, पवन और जल ऊर्जा जैसे स्वच्छ ऊर्जा के स्रोतों की ओर बढ़ना चाहिए।

जन जागरूकता-

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने की जरूरत है। शिक्षा, कार्यशालाओं और मीडिया के माध्यम से लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में बताया जाना चाहिए।

सुझाव-

हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखना होगा, ताकि हम और हमारी धरती दोनों स्वस्थ और सुरक्षित रह सकें।

इसलिए, आइए हम सब मिलकर अपने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हों इसके प्रति समाज में जागरूकता लाएँ और छोटे-छोटे कदमों से बड़े बदलाव की शुरुआत करें।

-मधुबनी, बिहार

हार से मत हारना तू

रात गहराई अगर हो, घोर अँधियारा विकट।
तब समझ लेना मनुज रे, अब सवेरा है निकट॥
स्वर्ण स्यंदन बैठ करके, देव रवि होंगे उदित।
यह जगत होगा प्रकाशित, माँ धरा होगी मुदित॥

बाग उपवन हँस उठेंगे, हर कली जाए चटक।
झूम नाचेंगी तितलियाँ, पुष्प के ऊपर मटक॥
गुनगुनाएंगे खुशी से, मनचले सारे भ्रमर।
श्याम से मिल हर कली का, रूप जाएगा सँवर॥

घोर संकट जब पड़े तो, मत दुखी होना कभी।
त्याग के मन की निराशा, उठ खड़ा हो जा अभी॥
हार से मत हारना तू, चल निरंतर निज डगर।
रख अटल विश्वास मन में, लक्ष्य आएगा नजर॥

जलवायु परिवर्तन से कैसे निपटा जाए?

आशा गुप्ता

पृथ्वी पर जीवन का आधार केवल मनुष्यों की क्षमता नहीं, बल्कि प्रकृति का संतुलित स्वरूप है। हवा, पानी, जंगल, मिट्टी, ऋतुचक्र और जैव विविधता—इन सभी के बीच एक अदृश्य सम्बन्ध है, जिसे हम पर्यावरण कहते हैं। जब यह संतुलन बिगड़ता है, तो उसके परिणाम पूरी मानव सभ्यता को प्रभावित करते हैं। आज विश्व जिस सबसे गंभीर खतरे का सामना कर रहा है, वह है जलवायु परिवर्तन। यह सिर्फ मौसम में बदलाव नहीं, बल्कि पृथ्वी की संपूर्ण प्रणाली में हो रहा एक व्यापक, तेज़ और खतरनाक परिवर्तन है, जिसका असर हमारे वर्तमान और भविष्य दोनों पर पड़ता है।

जलवायु परिवर्तन का अर्थ है—पृथ्वी के मौसम, तापमान और प्राकृतिक प्रणालियों में दीर्घकालिक परिवर्तन। ऋतुओं का चक्र बदलना, तापमान का लगातार बढ़ना, भारी वर्षा, सूखा, गर्म हवाएँ, तूफान, बर्फ पिघलना—ये सब जलवायु परिवर्तन के ही संकेत हैं। वैज्ञानिक रूप से देखा जाए तो पृथ्वी का तापमान औद्योगिक क्रांति से पहले की तुलना में तेजी से बढ़ रहा है। इसे ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है। यह वृद्धि मानव गतिविधियों के कारण है और यह प्राकृतिक चक्रों की तुलना में कई गुना तेज़ है।

आइये, जानते हैं जलवायु परिवर्तन के मुख्य कारणों के बारे में- ग्रीनहाउस गैसों का बढ़ता उत्सर्जन, कोयला, पेट्रोल, डीज़ल, प्राकृतिक गैस आदि के जलने से कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड जैसी गैसें लगातार बढ़ रही हैं। ये गैसें पृथ्वी की सतह से निकलने वाली ऊष्मा को फँसा लेती हैं, जिससे तापमान और बढ़ता है।

वनों की कटाई- जंगल पृथ्वी के फेफड़े कहे जाते हैं। पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को सोखकर ऑक्सीजन बनाते हैं, लेकिन लगातार जंगल कटने से यह प्राकृतिक संतुलन टूट रहा है। शहरों का विस्तार, खेती के लिए भूमि साफ करना, अवैध कटाई—ये सभी कारण वनों के विनाश में प्रमुख हैं।

औद्योगिक गतिविधियाँ- कारखानों से निकलने वाला धुआँ, रसायन, अपशिष्ट और विषैली गैसें वायुमंडल को प्रदूषित कर रही हैं। उद्योगों के बढ़ते उत्सर्जन ने पृथ्वी के तापमान को रिकॉर्ड स्तर पर पहुँचा दिया है।

अत्यधिक कृषि और उर्वरकों का प्रयोग- रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक और पशुपालन से बड़ी मात्रा में मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड उत्सर्जित होता है, जो जलवायु संकट को और गहरा कर रहा है। उच्च बिजली उपयोग, एयर कंडीशनर, रेफ्रिजरेटर और वाहनों की बढ़ती संख्या पर्यावरण पर भारी दबाव डाल रही है।

इन सब कारणों से जलवायु परिवर्तन के विभिन्न प्रभाव देखने को मिलते हैं। हर वर्ष विश्व का तापमान नए रिकॉर्ड तोड़ रहा है। यूरोप, अमेरिका, भारत और अफ्रीका में गर्मी की लहर से हजारों लोगों की जान जा चुकी है। हिमालय, आर्कटिक और अंटार्कटिका के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं।

इसका सीधा प्रभाव समुद्र स्तर पर पड़ रहा है, जिससे तटीय शहरों के डूबने का खतरा बढ़ रहा है। कई क्षेत्रों में अचानक भारी वर्षा बाढ़ का कारण बन रही है, जबकि कई प्रदेशों में महीनों तक सूखा पड़ रहा है। दोनों स्थितियाँ कृषि पर सीधा प्रहार करती हैं। चक्रवात, बवंडर, जंगल की आग, तूफान और भूस्खलन जैसी घटनाएँ तेज़ी से बढ़ी हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण कई जीव प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं। कोरल रीफ मर रहे हैं, पक्षियों का प्रवास बदल रहा है, और समुद्री जीवन अस्त-व्यस्त हो रहा है।

अनियमित मौसम के कारण किसान सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। फसलें सूखे, बाढ़ और तापमान के उतार-चढ़ाव से नष्ट हो रही हैं, जिससे खाद्यान्न संकट गहरा रहा है। हीट स्ट्रोक, त्वचा रोग, साँस संबंधी समस्याएँ, संक्रामक बीमारियाँ—ये सभी जलवायु परिवर्तन की देन हैं। गर्म वातावरण वायरस और बैक्टीरिया को तेजी से फैलाता है।

गौरतलब है कि इन्हीं प्रभावों की वजह से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है। वायु, जल, भूमि और ध्वनि प्रदूषण मानव और पशु दोनों के मानसिक स्वास्थ्य पर असर डाल रहा है। मानव जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव दिखने लगा है। आज विश्व का बड़ा हिस्सा पानी की कमी से जूझ रहा है। प्राकृतिक आपदाओं, फसल क्षति और स्वास्थ्य समस्याओं के कारण देशों की अर्थव्यवस्थाएँ प्रभावित हो रही हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण कई लोग रहने की जगह छोड़ने को मजबूर हो रहे हैं। तटीय क्षेत्रों, द्वीपों और रेगिस्तानी हिस्सों में यह समस्या गंभीर है।

अब बात आती है कि आखिर जलवायु परिवर्तन से कैसे निपटा जाए? इसका भी समाधान है। हमारे लिये सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल ऊर्जा और बायोफ्यूल अपनाना अत्यंत आवश्यक है। यह ग्रीनहाउस गैसों को कम करता है और ऊर्जा का स्थायी स्रोत प्रदान करता है।

साथ ही हमें वनों का संरक्षण करना होगा क्योंकि पेड़ जलवायु परिवर्तन से लड़ने का सबसे प्रभावी हथियार हैं। हर व्यक्ति वर्ष में कम से कम एक पेड़ अवश्य लगाए। प्लास्टिक का उपयोग भी कम से कम करना होगा।

हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि कपड़े के थैले, काँच और स्टील के बर्तन पर्यावरण को बचाते हैं। इसके साथ ही जल संरक्षण भी आवश्यक है। वर्षा जल संचयन, टपक सिंचाई, पानी का पुनर्चक्रण—ये सभी उपाय जल संकट को कम कर सकते हैं। कचरे का सही प्रबंधन और पर्यावरण शिक्षा द्वारा भी

पर्यावरण संरक्षण की समझ बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है।

भारत की भूमिका और प्रयास

भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा कार्बन उत्सर्जक है, लेकिन पर्यावरण संरक्षण में इसका योगदान सराहनीय है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए विश्व का नेतृत्व, स्वच्छ भारत मिशन, नमामि गंगे परियोजना, वृक्षारोपण अभियान, नेशनल एक्शन प्लान ऑन क्लाइमेट चेंज आदि ऐसी कई योजनाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर कार्य किया जा रहा है।

निष्कर्ष– जलवायु परिवर्तन कोई दूर का मुद्दा नहीं—यह आज की सच्चाई है। पृथ्वी की रक्षा सरकारों या वैज्ञानिकों की ज़िम्मेदारी मात्र नहीं, बल्कि हर नागरिक का कर्तव्य है। हमारी छोटी-छोटी आदतें — पानी बचाना, पेड़ लगाना, बिजली कम खर्च करना, प्लास्टिक छोड़ना — भी बड़ा बदलाव ला सकती हैं। यदि हम आज सतर्क न हुए, तो आने वाली पीढ़ियाँ एक ऐसी धरती पर जीने को मजबूर होंगी जहाँ स्वच्छ हवा, पानी और स्वस्थ पर्यावरण केवल सपना बनकर रह जाएगा, लेकिन यदि हम सचेत होकर कदम उठाएँ, तो हम एक सुंदर, सुरक्षित और संतुलित पृथ्वी का निर्माण कर सकते हैं।

-श्रीविजयपुरम, अंडमान-निकोबार

जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण : एक वैश्विक संकट

श्याम सखी सीमा

आज विश्व जिस सबसे बड़े संकट का सामना कर रहा है, वह है जलवायु परिवर्तन। पृथ्वी के प्राकृतिक तापमान में तेजी से वृद्धि, ग्लेशियरों का पिघलना, समुद्र-स्तर बढ़ना, अनियमित मौसम और प्राकृतिक आपदाओं में बेतहाशा वृद्धि - ये सभी संकेत बताते हैं कि हमारा पर्यावरण गहरी चोट झेल रहा है। यह स्थिति केवल वैज्ञानिकों या पर्यावरणविदों की चिंता नहीं, बल्कि पूरी मानवता के अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न बन चुकी है।

जलवायु परिवर्तन के मूल में मनुष्य द्वारा की जा रही वे गतिविधियाँ हैं, जो प्रकृति के संतुलन को लगातार बिगाड़ रही हैं। अनियंत्रित औद्योगीकरण, जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई, प्लास्टिक प्रदूषण और जनसंख्या वृद्धि के साथ बढ़ती ऊर्जा माँग ने वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रस ऑक्साइड जैसी गैसों की मात्रा को कई गुना बढ़ा दिया है। ये ग्रीनहाउस गैसें पृथ्वी के तापमान को तेजी से बढ़ा रही हैं, जिसे ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव आज हर क्षेत्र में दिख रहे हैं। मौसम चक्र अनियमित हो रहे हैं—कहीं सूखे की मार तो कहीं अत्यधिक वर्षा और बाढ़। समुद्र तटों के पास बसे शहर समुद्र-स्तर वृद्धि के खतरे में हैं। हिमालयी ग्लेशियरों का तेज़ी से पिघलना भविष्य के जल संकट की चेतावनी है। खेती-किसानी भी जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से अछूती नहीं रही। कभी समय पर बारिश का न होना तो कभी ओलावृष्टि व तूफानों से फसलें नष्ट होना—ये स्थितियाँ किसानों के जीवन पर भारी पड़ रही हैं।

पर्यावरण की इस बिगड़ती स्थिति का प्रभाव केवल प्रकृति तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव स्वास्थ्य पर भी गहरा पड़ रहा है। बढ़ते तापमान से हीट स्ट्रोक के मामले बढ़े हैं, वायु प्रदूषण से अस्थमा, एलर्जी और फेफड़ों की बीमारियाँ लगातार बढ़ रही हैं। जल प्रदूषण और मिट्टी की उर्वरता में कमी खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती है।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए हमें सामूहिक प्रयास और सजगता दोनों की आवश्यकता है। सबसे पहले, नवीकरणीय ऊर्जा जैसे सौर, पवन और जल ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना होगा। इससे न केवल प्रदूषण कम होगा, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों का संतुलन भी बना रहेगा। वनों का संरक्षण और बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण जलवायु परिवर्तन को रोकने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं, क्योंकि पेड़ वातावरण से कार्बन शोषित कर धरती को ठंडा रखते हैं।

साथ ही हमें जीवनशैली में भी बदलाव लाने होंगे—ऊर्जा की बचत, प्लास्टिक का कम उपयोग, अपशिष्ट प्रबंधन, बारिश के पानी का संचयन और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देना जरूरी है। सरकार की नीतियों के साथ-साथ समाज, शिक्षण संस्थानों और मीडिया की भूमिका भी जागरूकता बढ़ाने में अहम है।

अंततः, जलवायु परिवर्तन कोई दूर भविष्य का संकट नहीं, बल्कि वर्तमान की सच्चाई है। अगर हम आज कदम नहीं उठाते, तो आने वाली पीढ़ियों को एक असुरक्षित और असंतुलित पृथ्वी का सामना करना पड़ेगा।

समय आ गया है कि हम प्रकृति को सिर्फ संसाधन नहीं, बल्कि अपनी जीवनरेखा समझें और इसके संरक्षण के लिए दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें।

-फरुखाबाद

पर्यावरण की सुरक्षा से प्राकृतिक सुरक्षा

चंचलिका शर्मा

देखा जाये तो पर्यावरण का सीधा संबंध जलवायु से है। पर्यावरण अर्थात आसपास के वो सभी साधन, सजीव निर्जीव वस्तुएं जो हमारे जीवन को प्रभावित करती है। इसमें निर्जीव वस्तुएं जो हमारे जीवन को प्रभावित करती है। इसमें प्राकृतिक रहस्य जैसे मिट्टी, पानी, हवा के साथ साथ मानव द्वारा बनाई गई चीज़ें, जीवन से प्रभावित चीज़ें जैसे पौधे और जीव, जंतु शामिल हैं।

सीधे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्यावरण एक जटिल प्रणाली है जो पृथ्वी में जीवन को बनाये रखने में सहायक होती हैं। यह हमारे चारों तरफ़ एक ऐसा परिवेश तैयार करता है जिसमें हम रहकर काम करते हैं , जीवंत रहते हैं।

अगर छानबीन की जाये तो जानकारी मिलती है कि पर्यावरण के कुछ घटक होते हैं, जैसे- १.) जैविक पर्यावरण जिसमें सभी जीवित प्राणी शामिल होते हैं जैसे मनुष्य, जीव- जंतु , पक्षी, पेड़ - पौधे साथ ही उनके बीच चल रहे सभी प्राकृतिक प्रक्रियाएं।

२.) अजैविक पर्यावरण जिसमें निर्जीव तत्व और उनसे जुड़ी प्रक्रिया, शामिल हैं जैसे पहाड़, ज़मीन, नदियाँ, हवा इत्यादि।

3.) सामाजिक पर्यावरण, इसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, और सांस्कृतिक कारक शामिल हैं, जो मानवीय मूल्यों और व्यवहारों को आकार देती है।

पर्यावरण का हमारे जीवन से बहुत बड़ा संबंध है जैसे- सांस लेने के लिए हवा, पीने के लिए पानी एवम् खाने के लिए उगाये गये शाक - सब्ज़ी। पर्यावरण जीवित और निर्जीव के बीच परस्पर की क्रिया को परिभाषित करती है।

हम कह सकते हैं कि पर्यावरण और मनुष्य अपनी गति विधियों से एक दूसरे को परिभाषित करती है जिससे उनमें एक आंतरिक संबंध स्थापित होती है। जलवायु किसी स्थान के मौसम की दीर्घ कालिक औसत स्थिति है जो साधारणतया कम से कम तीस वर्षों की अवधि में मापी जाती है, जिसमें वर्षों तापमान और धूप जैसी मौसम की स्थितियों औसत शामिल होता है। जलवायु में तापमान, वर्षा, हवा और विकिरण जैसे कारकों के दीर्घ कालिक तरीके शामिल है। उष्णकटिबंधीय या मरुस्थलीय जलवायु जिन्हें उनके औसत तापमान और वर्षा के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। भारत की जलवायु दक्षिण में उष्ण कटिबंधीय है शुष्क, हल्का, मध्य अक्षांस ठंडा, मध्य अक्षांस और ध्रुवीय। हम कह सकते हैं कि पर्यावरण की सुरक्षा, सुधार और प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग सुरक्षित करना, जबकि जलवायु संरक्षण का अर्थ है मानवीय गतिविधियों से होने वाले प्रभावों को रोकना और चरम मौसम की घटनाओं को रोकना । पर्यावरण को स्वच्छ रखने का दायित्व हमारा ही है। पेड़ पौधों को काटने के बजाय वन, जंगल से लेकर शहर, गाँव में पेड़ पौधों की सुरक्षा अति आवश्यक है। पानी में गंदगी फैलाना, पर्यावरण को दूषित करना है। आज बड़े बड़े पेड़ों को काटकर लकड़ियाँ बेचने का काम चोरी छिपे चलता रहता है ।

यह सभी जानते हैं कि पेड़ों को काटने का सीधा असर पर्यावरण पर पड़ता है, मौसम पर भी इसका असर पड़ता है। बारिश के समय बारिश न होना अथवा फ़सल की कटाई के समय बारिश के होने से अनाजों का नुकसान होता है जिससे किसानों की दुर्दशा अवर्णनीय होता है, अनाहार की नौबत आती है क्योंकि फसल के सड़ जाने से अनाजों की विक्री नहीं हो पाती है। पर्यावरण की सुरक्षा से जलवायु भी नियमित रहती है, प्राकृतिक सुरक्षा बनी रहती है।

– बडोदरा, गुजरात

जलवायु परिवर्तन

माण्डवी सिंह चौहान

जब छोटी सी नाव पर
सौ सवार होंगे,
दरिया को दर्द और
गम उधार देंगे
नाव डगमगाएगी डूबने का डर दिखाएगी
इसमें कश्ती और माँझी का दोष क्या?
अन्धानुकरण में मदहोश हुए जा रहे
जंगल को खेत, धरा बंजर बना रहे
फैक्ट्री की फसल धुंध की बरसात ढा रहे
वाहनों की लहलहाती फसलें उगा रहे
कल की विषमताओं का आज हमें होश कहाँ?
पशु-पक्षी, जीव-जन्तु देखने को तरस जाओगे,
षट्ऋतु वर्णन सिर्फ कविताओं में पाओगे
माँगोगे पानी, जहर का प्याला मिलेगा
साँसों में कार्बन, वायुमण्डल में हाला मिलेगा,
जब चिड़िया चुग जाएगी खेत,
फिर पछताने का तोष क्या?
करनी और कथनी का अन्तर मिट जाए
प्रकृति की खशहाली पर, सुख बलि जाए
धरा को सजाएँगें, मिलकर ये कसम खाएँ
पुरखों की पूँजी विरासत में छोड़ जाएँ
नहीं तो अपनी लगाई आग में झुलसेंगे
फिर, अफसोस क्या?
इसमें कश्ती और मांझी
का दोष क्या ?

-भोपाल

मौसम के बदलते रंग-ढंगः खतरे की घंटी

डॉ. पल्लवी सिंह
'अनुमेहा'

पिछले कुछ वर्षों से मौसम में अप्रत्याशित रूप में हम सबने बदलाव को महसूस किया है ? कोई अगर ये कहे कि इसका मतलब जलवायु बदलाव से है, तो शायद हम इसको मजाक में ले रहे है, किन्तु सच इसके विपरीत ही है।

इस समय जलवायु परिवर्तन आज के समय में सबसे गम्भीर वैश्विक चुनौती बन गया है। दुनिया भर के तापमान में बढ़ोतरी हो रही है, मौसम का पैटर्न ही बदल रहा है और प्राकृतिक आपदाएं भी लगातार से बढ़ रहीं है। यह न केवल पर्यावरण को ही प्रभावित कर रहा है बल्कि कृषि, जल संसाधनों, जैव प्रौद्योगिकी में विविधता और सेहत पर हो रही गम्भीर बीमारियों के रूप में भी प्रभाव डाल रहा है।

हमारा देश इससे अलग नही है क्योंकि हमारा देश अपनी विविधता पूर्ण भौगोलिक संरचना और जलवायु के कारण संवेदनशील है। इसलिए इसमें बदलाव के लक्षण शीघ्र ही दिखलाई देते है।

अभी कुछ वर्षों में असमय बारिश का होना, भीषण गर्मी पड़ना या फिर लंबे समय तक सूखे का असर स्पष्ट दिख रहा है। जहाँ कभी बाढ़ नहीं आती थी, वहाँ बाढ़ का आना या फिर कहीं भूस्खलन का होना। इसका उदाहरण है राजस्थान की तपती भूमि पर बाढ़ का प्रभाव और हिमाचल जैसे हरे-भरे पहाड़ों पर भूमि भूस्खलन। यह केवल पर्यावरण का बदलाव ही नही है अपितु हमारी अर्थव्यवस्था, खेती और जीवन जीने की कला को भी प्रभावित कर रहा है।

जलवायु में मौसम परिवर्तन का अर्थ है पृथ्वी के जलवायु में लंबे समय से हो रहे बदलाव, जो विशेष रूप से मानवीय गतिविधियों और प्राकृतिक प्रक्रियाओं के कारण होता है। यह बदलाव तापमान में वृद्धि और चरम मौसम प्रभाव (एक्सट्रीम बेदर कंडीशन) के रूप में दृष्टिगत होता है। यह वर्तमान में औद्योगिकी क्रांति इसका मुख्य कारण बन रहा है जो ग्रीन हाउस में गैसों का उर्त्सजन में वृद्धि है जिससे दुनिया भर का तापमान बढ़ रहा है। कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और नाइट्रोजन गैसे वायुमंडल में एक परत बना रही है जो सूर्य से आने वाली गर्मी को रोककर धरती को और अधिक गर्म कर रही है। यही ग्रीन हाउस की प्रक्रिया है।

इसके अलावा वनों की कटाई भी जलवायु परिवर्तन का एक सबसे बड़ा कारण है। पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके वायुमंडल में संतुलन बनाते है, लेकिन जब वन ही समाप्त हो रहे हो तो यह संतुलन का बिगड़ना अवश्यभावी है। इस प्रकार वायुमंडल में CO_2 की मात्रा बढ़ रही है।

शहरीकरण और परिवहन की अधिकता के बढ़ते उपयोग से भी प्रदूषण बढ़ रहा है, जिससे वातावरण में वृद्धि हो रही है। खेतों में रासायनिक खादों और कीटनाशकों के इस्तेमाल से भी मीथेन और नाइट्रस आक्साइड जैसी गैसों का उत्सर्जन में वृद्धि होती है, जो जलवायु परिवर्तन को तेज कर रहा है।

मौसम के बदलाव में प्राकृतिक कारण भी है। ज्वालामुखी विस्फोट, समुद्री धाराओं में बदलाव और सौर विकिरण में उतार-चढ़ाव है जो मौसम में परिवर्तन ला रहे है और इस सबका मुख्य कारण मानवीय गतिविधियां है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जो सिर्फ मानसूनी बारिश पर निर्भर करती है। इस समय असामान्य बारिश और तापमान में दिन-ब-दिन बढ़ोतरी ने किसानों को परेशान कर रखा है। जिससे किसानों को आर्थिक रूप से भी प्रभावित किया है।

शहरी जीवन भी इससे प्रभावित है। भारत के महानगर हो या नगर इस समय गर्मी की अधिकता से प्रभावित हो रहे है। जिससे ऊर्जा की मांग बढ़ रही है। बिजली की खपत में इजाफा हो रहा है। जीवाश्म जैसे ईधनों का अधिक उपयोग ही इसका एक मुख्य कारण है।

वायु प्रदूषण पहले से ही एक गम्भीर समस्या रही है। अब इसने अपना विकराल रूप ले लिया है।

समुद्र तट पर रहने वाले लोगों की स्थिति भी चिंताजनक है। चक्रवाती तूफानों की संख्या का लगातार बढ़ना इसका मुख्य एक कारण बन गया है और तटीय लोगों का उस जगह से विस्थापन का सामना कर रहे है। कई परिवार इस वजह से अपने पैतृक भूमि से मुंह मोड़ रहे है।

ऐसे अनेक कारण है, जो हमारे लिये खतरे की घँटी बन गए है। हमने समय रहते इस बात को गम्भीरता से नही लिया तो आने वाले समय में पूरी पृथ्वी का विनाश होना आवश्यक है। हमें समय रहते इन अप्रत्याशित बदलावों को क्लाइमेंट चेंज से न जोड़े। इस बात पर चर्चा, परिचर्चा, गोष्ठियों का आयोजन करें कि हम अपनी जीवनशैली में बदलाव लेकर आये जिससे कार्बन उत्सर्जन को कम कर सके। यह बदलाव हमारे जीवन में सकारात्मक कदम हो सकता है।

-बैतूल

न ये धरा होगी न ये आसमान होगा, पर्यावरण न बचा तो इंसान न होगा।

विश्व पर्यावरण दिवस एक अभियान है ,जो प्रत्येक वर्ष ५ जून को, विश्वभर में पर्यावरण के नकारात्मक प्रभावों को रोकने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए मनाया जाता है। इसकी घोषणा और स्थापना संयुक्त राष्ट्र महासभा के द्वारा १९७२ में हुई थी, हालांकि इसे हर वर्ष मनाने की शुरुआत १९७३ से हुई है। इसका वार्षिक कार्यक्रम संयुक्त राष्ट्र के द्वारा घोषित की गई।

डॉ मीना कुमारी परिहार 'मान्या'

समारोह प्रत्येक वर्ष अलग-अलग शहरों के द्वारा किया जाता है, जिसके दौरान पूरे सप्ताह अन्तर -राष्ट्रीय प्रदर्शनियां लगाई जाती है। इस अभियान के आयोजन के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र लोगों को पर्यावरण के बारे में जागरूकता और प्रोत्साहन। को बढ़ावा देता है। यह सकारात्मक सार्वजनिक गतिविधियां राजनीतिक ध्यान प्राप्त करने के लिए प्रभावी वार्षिक अभियान है। इसे अधिक प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न गतिविधियों कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। विभिन्न क्रियाएं--जैसे-निबंध लेखन, पैराग्राफ लेखन, भाषण,नाटक, का आयोजन, सड़क रैलियां, प्रश्नोत्तरी, प्रतियोगिता, कला और चित्रकला प्रतियोगिता, परेड, वाद-विवाद, आदि का आयोजन किया जाता है। लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने के लिए अन्य प्रकार की प्रदर्शनियों को भी आयोजित किया जाता है।

विश्व पर्यावरण दिवस के दिन, यह अन्य देशों के द्वारा वैयक्तिक रूप से अपने राज्यों, शहरों,घरों, स्कूलों, कालेजों, सार्वजनिक स्थलों आदि पर परेडों और सफाई, गतिविधियां रीसाइक्लिंग पहल, वृक्षारोपण के साथ सभी प्रकार की हरियाली वाली गतिविधियों खको प्रोत्साहित करने और लोगों को इस खूबसूरत ग्रह की बुरी परिस्थितियों की ओर ध्यान देने के लिए आयोजित किया जाता है। इस दिन सार्वजनिक अवकाश नहीं रहता है। इस प्रकार सभी स्कूल और कार्यालय खुले रहते हैं र कोई भी अवकाश नहीं लेता है।

यह कार्यक्रम इस पृथ्वी की सुन्दरता को बनाए रखने के लिए कुछ सकारात्मक गतिविधियों के लिए एक साथ कार्य करने की एक पहल है। हमें पूरे वर्ष कार्यक्रम के उद्देश्यों को अपने ध्यान में रखना चाहिए और उन्हें वृक्षारोपण के माध्यम से आसपास के वातावरण को सुन्दर बनाने और साफ-सफाई, पानी की बचत, बिजली का कम प्रयोग, जैविक और स्थानीय खाद्य पदार्थों का उपयोग जंगली जीवन। की सुरक्षा आदि बहुत सी गतिविधियों को कार्य ?रूप में बदलना चाहिए। जीवन के लिए हमारे पास एकमात्र यही ग्रह है,यह हमारा घर हूं और हम सभी इसकी प्राकृतिक सुन्दरता को सदैव के लिए बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं।

-पटना

जियो और जीने दो

सतीश चंद 'सतीश'

सुनो वया,ओ सुनो बया,
नन्हें नन्हें पंख तुम्हारे,
हरे सुरमई, पीत किनारे,
प्यारे प्यारे झुंड तुम्हारे,
बचपन में थे खूब निहारे,
पत्र पतेलो के,धागे से कुतर
कुतर कर तुम लाती थी,
बेर बबूलों की टहनी पर,
ताड़ खजूरों के पत्तों पर,
उन धागों को लटकाती थी,
चोंच और पंजों से ही
तुम बस बुनने में जुट जाती थी,
बिना पढ़े तकनीक ज्ञान,बिन औज़ारों के,
एक नाप के कैसे नीड़ बना पाती थी संग हवा के,
जोंज तुम्हारी, बूढ़े दादा की दाढ़ी सी लहराती थी,
तुम्हें तुम्हारे चूजों के संग, झूला भी तो झुलवाती थी,
बचपन से ही सोच रहा था, ऐसा क्या हो गया,
उजड़ गई वह सभी बस्तियां, बिला गई क्यों बया,
आधी सदी बीत जाने पर, एक नई बेरी के ऊपर,
देख पुनर्वासन बस्ती का, बड़ा अचंभा हुआ,
क्यों आई तुम्हीं बताओ वया, सुनकर मेरी बात वया ने,
अपने मन के दर्द बखाने, तुमने ही अपनी ऐसी भूख बढ़ाई,
जंगल काटे पर्वत काटे, ऊसर,बंजर, खन्दक खाई,
सबकी ही कर रहे कटाई, बचे ना ताड़, खजूरे,बेर,बबूलें,
मिटा दिया आधार हमारा, कहां रहें हम,किस पर झूलें,
हमें तुम्हारे ही विकास ने, विस्थापित कर भगा दिया था,
तब हमने आरक्षित, घने बबूली वनखंडों में महानगर के,
नया ठिकाना बना लिया था, किंतु हाय रे भूख तुम्हारी,
नई शरण स्थली हमारी, पर भी कर रहे मारामारी,
लगे चलाने वहाँ कुल्हाड़ी, पत्थर के जंगल रचने को,
बुलडोजर ने बांह पसारी, बार बार विस्थापित होकर,
फिर उड़ने की की तैयारी, यहाँ दिख गया बृक्ष बेर का,
बस गई बस्ती नई हमारी, डाल आंख में आंख बया ने,
कहना आगे रखा जारी, अब बस तुमसे यही निवेदन,
जियो और जीने दो बाला, स्वयं तुम्हारे भी जीने को,
बहुत जरूरी है सम्वेदन, इस तरु को अब नहीं काटना,
पेट भरे न तृष्णाओ का अगर तुम्हारी,
इसकी छाया में भी अपनी इच्छाओं के बीज बापना,
कृमि कीटों से, घास बीज से, हम अपना जीवन जी लेंगे,
जो पैसो से मिल ना सकेगी, वह खुशियाँ, हम तुमको देंगे,
कह कर वया फुर्र हो घुस गई नए नीड़ में,
हम उलझे ही खड़े रह गए, अंध दौड़ती हुई भीड़ मे ।।

-फरुखाबाद

समुचित समाधान ढूंढना कठिन

ललित शर्मा

विश्वभर में जलवायु परिवर्तन की बढ़ती विकट समस्या का समुचित समाधान ढूंढना एक संकट है, इसे नियन्त्रित करना,सबको सचेत करना, सचेत रहना, सजगता बढ़ाना एवं ध्यानकेन्द्रित करना अत्यंत अनिवार्य प्राथमिक कार्य बन चुका है ।

निसंदेह पैर पसारती वैश्विक जटिल पीड़ा की अवस्था से बिल्कुल भी जागरूक नहीं है। विपरीत अचेतावस्था में है । आधुनिकता की अंधी दौड़ में तूफानी वेग में जलवायु परिवर्तन की समस्या ने होश उड़ा दिए है। इसके प्रचंड रूप में हम बच नहीं पा रहें है । कमोधिक प्रभावित करने पर भला कोई भी वंचित नहीं है।

स्थिति को भांपते हुए भविष्य की चिंताएं सताने लगी है । इसके जिम्मेवार कौन होंगे और क्यों होंगे ? इसका गहराई से चिंतन मंथन करने के साथ मिलबांटकर निष्कर्ष भी निकालना अहम जिम्मेवारी का मूल विषय है । वर्तमान में विफल भी कहें तो शायद गलत नही होगा । प्रकृति के प्रति रखरखाव की मूलभूत चिंताओं से हम कोसों दूर है किंतु अपनी खुशी में सबजन चूर है ।

जलवायु परिवर्तन के पीछे के कारणों पर हमारी सजगता और सोच साफतौर पर बिल्कुल गौण है । यह विश्वभर का सर्वाधिक चिंताजनक एक अहम सवाल बन गया है । आश्चर्यजनक तरीके से जलवायु परिवर्तन के वर्तमान में बिगड़ते बदलते हालात हमें आये दिन परिचित करा रहें है । विकासशील प्रतियोगिता का मूल मतलब विनाश और तबाही करना नहीं है, पृथ्वी को खुशहाल रखने और रहने के नियमधर्म पर कंधे से कंधा मिलाकर चलना है।

वर्ष २०२३ सबसे अधिक गर्मी का था। नासा के रिकार्ड के मुताबिक ०.२३ डिग्री सेल्सियस अधिक गर्मी रही जो वर्ष १९५१ से ८० तक की अवधि में गर्मी के रिकार्ड में १.२ डिग्री सेल्सियस अधिक थी । इसके परिणाम यह रहे कि अमेरिका, कनाडा हवाई के वनों में भीषण आग की घटनाओं ने चोंका दिया। जलवायु परिवर्तन में मुख्यत: कही लू कही बरसात की हालात बनी । इसमें इटली, ग्रीस और एशिया मध्य यूरोप अमेरिका वर्षा में था जबकि दक्षिण अमेरिका जापान यूरोप अमेरिका में विपरीत यानि प्रचंड गर्मी लू की हालात रही।

विश्व के मौसम विज्ञान संगठन की रिपोर्ट में तथ्यों को उजाकर किया गया है । पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध की प्रचंड गर्मी, यूरोपीय जलवायु सेवा कोपरनिकस की घोषणा के मुताबिक जुलाई अगस्त में सर्वाधिक गर्मी, अगस्त औसतन से करीब १.५ डिग्री सेंटीग्रेड अधिक गर्मी, सितंबर के महीने में लीबिया आये भारी तूफान और मूसलाधार बरसात वहीं दो बांध प्रभावित, यहीं पर तबाही का मंजर दिखा। भयानक हालात पर सुनामी की घोषणा तक की गई, दक्षिण पूर्व अरब सागर में उठे विप्र जाय चक्रवात के असर से राजस्थान, गुजरात बच नहीं सका। तबाही का मंजर साफ झलकता दिखाई पड़ा। इसमें कई अन्य स्थानों में जैसे उत्तराखंड,पंजाब और हिमाचल के उपरांत दिल्ली सहित पड़ोसी मैदानी इलाके में मूसलाधार बरसात का भारी असर दिखाई पड़ा, इधर नासा की पिछली जांच रिपोर्ट में पाया गया कि अलनीनो की वापसी के चलते समुद्र की सतह का बढ़ा तापमान रिकार्ड गर्मी के लिए अधिक जिम्मेवार है । इस की पुष्टि लगातार जांच कर्ताओं की टीम ने कर दी है । उनकी जांच की रिपोर्ट में खुलासा करते हुए वैज्ञानिकों ने कहा कि उत्सर्जित ग्रीनहाउस गैस बडा कारण है, यह मानव की ही देन है । विश्वभर का तापमान जुलाई माह में १६.९५ डिग्री सेंटीग्रेड आंका गया था, वर्ष २०१९ में एक तिहाई अधिक पाया गया। इसमें देखा गया कि जो तापमान का रिकार्ड दर्ज हुआ उसमें एक डिग्री के सोंवे व दसवें भिन्नता में टूटा मिलने पर इसे असमान्य बताया गया । हांगकांग के बारे भी देखा गया कि बरसात के प्रचंड रूप ने भारी प्रभावित कर दिया था। यहाँ पर कई शहरों के डूबने की स्थिति देखी गई, यहाँ पर आयी बरसात में जलमग्न होने से कोई बच नहीं सके। चीन के शेनजेंग में तूफानी हवाओ के असर से भारी बरसात प्रभावित कर दी।

विश्वभर में इसके कारणों पर शिंकजा कसने की पहल करने पर ही राहत की सांस मिल पाएगी । आज हमें अचानक पृथिवी पर विनाश तबाही का मंजर हैरान कर हरदम रुलाता है । आज विश्वजगत में ग्रीन हाउस गैसों की अंतहीन पीड़ाओ के शिकंजे फंसे है । बेसुमार मात्रा में मिथेन, क्लोरो फ्लूरो,कार्बन, कार्बनडाई ऑक्साइड आदि का बढ़ता खतरा इसकी भयावहता से समूची कार्यप्रणाली में व्यापक प्रभाव पड़ रहा है । पृथ्वी की सतह में हवाओ के रुख और दूसरा समुद्र का तापमान काफी तेजी से बढ़ गया है । वर्तमान में शोधकर्ताओं के आंकड़ों में सबसे अधिक तीव्र वेग से आनेवाले तूफान में सर्वाधिक क्षति होने के अलग अलग स्थान, कहीं वर्षा की भारी कमी से भारी सूखा होने की समस्या उत्पन्न, कहीं कही अत्यंधिक भारी वर्षा से बाढ़ से तबाही की अनेको घटनाएं हैरान कर रही है। पृथ्वी पर सबसे अधिक समुद्र स्तर की वृद्धि होने के अलावा हमारे यहां महासागरों के शीतल के बजाय गर्म होने की खबरें दूसरी तरफ पहाड़ो पर्वतों की बर्फ पिघलने की घटनाएं एकाएक समुद्र के स्तर में व्यापक प्रभाव छोड़ रही है । ऐसी हालात में तटीय क्षेत्रों में भारी खतरा बढ़ जाता है। सुरक्षा की स्थिति बिगड़ने लगती है । तटीय क्षेत्र में बसने वालों की नाजुक हालत होती है।

हमारी जीवनशैली में हमें यह भी देखना होगा कि जलवायु परिवर्तन से सबसे ज्यादा हानि हो रही है, हमारे सामने ही दुर्लभ कई प्रजातियों की जीवनशैली को सुरक्षित करने का भारी खतरा बना हुआ है। उनको ऐसी हालत में अनुकूलन करना कठिन है। स्वस्थ्य जीवन शैली के बदले असहनीय प्रचंड गर्मी के प्रकोप से संबंधित अनेको बीमारियां के बढ़ने की प्रबल संभावना बढ़ रही है । हमें बेहिचक जलवायु परिवर्तन की मात्रा को घटाने के कारगर उपाय पर बल देना पड़ेगा ।

–डिब्रुगढ़, असम

भूमंडल पर पर्यावरणीय बदलाव

वल्लभ किशोर शर्मा

मानव सभ्यता का इतिहास जितना पुराना है, उतना ही मानव का प्रकृति से रिश्ता। मानव ने प्रकृति की गोद में सभ्यता एवं विकास यात्रा शुरू की, परंतु अब मानव निष्ठुरतापूर्वक दोहन करने लगा है। हमारी पृथ्वी ने हमें तमाम संसाधन प्रदान किये है, जिसके बल पर हम विकास कर सकें। प्रकृति के रहस्य को जानें बिना हमने इसका दोहन किया है।

ऋतुचक्र में परिवर्तन, विलुप्त होती प्रजातियां एवं वनस्पतियों का विवेक हीन दोहन का ही दुष्परिणाम है। इन विचित्र परिवर्तनों के कारण वैज्ञानिक मत कहता है कि हम हिमयुग की ओर लौट रहे हैं। जबकि प्रकृति अपार धन सम्पदा के रूप में बहुमूल्य खनिज, ईंधन के रूप में कोयला, गैस, तेल एवं जल संसाधन प्रमुख हैं परन्तु बढ़ती लालसा तथा निज स्वार्थ में हमने मनमाने ढंग से प्रकृति का शोषण किया और अब परिणाम हमारे आगे दिख रहें जैसे सुनामी, सूखा बाढ़ , भूस्खलन और भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं के माध्यम से प्रकृति अपना क्रोध प्रकट कर ही है।

लगातार बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणविदों की चिन्ता का प्रमुख विषय है । एक अध्ययन के अनुसार ग्रीन हाउस गैसों के कारण बादल लगातार गर्म होते जा रहे हैं। पिछले १०० सालों में पृथ्वी की सतही तापमान में ०.७४ डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हुई है, जो अगले कुछ सालों में १.५ से ४ प्रतिशत बढ़ जाने की आशंका है। इससे यह स्पष्ट हो चुका है कि ग्लोबल वार्मिंग के लिए ६० प्रतिशत जिम्मेदार कार्बन डाइऑक्साइड गैस है। इसके अलावा ग्रीनहाउस गैस द्वारा वातावरण में सल्फर डाइऑक्साइड की वृद्धि हुई है।

वनों की कटाई के कारण समय पर वर्षा नहीं हो रही है और जमीन से पानी लेने के लिए ८०-९० फुट तक खुदाई करनी होती है, यानी धरती का जलस्तर अत्यधिक नीचे जा चूका है। नदियां सूख रही है या प्रदूषित हो रही है। भूमि का निरंतर दोहन और रासायनिक खाद से भूमि बंजर होती जा रही है तथा उपजाऊ जमीन का निरंतर ह्रास हो रहा है। इससे आने वाले समय में हमारे सामने खाद्यान्न का संकट पैदा हो सकता है। इन परिस्थितियों पर अंकुश लगाने के लिए हमें पवन ऊर्जा,सौर ऊर्जा और स्वच्छ एवं हरित ऊर्जा के रूप में नाभिकीय ऊर्जा के उपयोग पर जोर देना चाहिए। वाहनों की बढ़ती संख्या पर रोक भी लगाना चाहिए।

२१वीं सदी मानव इतिहास की वह अवधि है जब विज्ञान और तकनीक ने अद्भुत तरक्की की—अंतरिक्ष अनुसंधान, सूचना क्रांति, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, चिकित्सा क्षेत्र में नवाचार, ऊर्जा उत्पादन, परिवहन, उद्योग और संचार के क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रगति।परंतु इसी प्रगति ने पृथ्वी के पर्यावरण को जिस प्रकार प्रभावित किया है, वह आज मानवता के सामने सबसे गंभीर चुनौती बनकर खड़ी है। पृथ्वी का बढ़ता तापमान, चरम मौसम, घटती जैव विविधता, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएं।ये सभी संकेत हैं कि हमारी विकास शैली प्रकृति की सीमाओं को लांघ चुकी है। विज्ञान-तकनीक और औद्योगिक विकास का दुष्प्रभाव हर ओर दिखने लगा है।

२० वीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर आज तक तेज़ औद्योगिकीकरण ने अभूतपूर्व ऊर्जा की मांग पैदा की।पेट्रोल, डीज़ल, कोयला और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधनों के अत्यधिक उपयोग से वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा बढ़ी।

ग्रीनहाउस गैसों के बढ़ते स्तर के परिणामस्वरूप पृथ्वी का तापमान असामान्य रूप से बढ़ने लगा, जिसे ग्लोबल वार्मिंग कहा जाता है। वायु प्रदूषण आज विश्व के लिए न केवल पर्यावरणीय, बल्कि स्वास्थ्य संबंधी आपदा है। इसके प्रमुख कारण वाहनों का अत्यधिक उपयोग डीज़ल व पेट्रोल से निकलने वाले धुएं में कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और कण पदार्थ घातक हैं। औद्योगिक इकाइयां फैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआं और रासायनिक गैसें हवा को विषैला बनाती हैं। बड़े शहरों में निर्माण स्थलों की धूल प्रदूषण का बड़ा स्त्रोत है। पॉलीथिन, प्लास्टिक और जैविक कचरे को जलाने से जहरीली गैसें उत्पन्न होती हैं।

वायु प्रदूषण से उत्पन्न समस्याएं जैसे हृदय रोग, दमा, फेफड़ों का कैंसर, एलर्जी बच्चों और बुजुर्गों में श्वसन संबंधी समस्याएं पौधों की उत्पादकता में कमी भी देखीं गई है। ध्वनि प्रदूषण से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव हुआ है।ध्वनि प्रदूषण २१वीं सदी की शहरी जीवन शैली की देन है। इसे 'अनसुना प्रदूषण' भी कहा जाता है क्योंकि इसे कम महत्व दिया जाता है, जबकि इसका प्रभाव अत्यंत गहरा है। ध्वनि प्रदूषण के स्त्रोत,वाहन और ट्रैफिक,लाउडस्पीकर, धार्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम के अलावा औद्योगिक मशीनें,निर्माण स्थलों की गतिविधियां, एयरपोर्ट और विमान की आवाज़ें भी ध्वनि प्रदूषण से होने वाली समस्याएं बढ़ाती है जैसे कानों की क्षमता में कमी अनिद्रा, तनाव, चिंता,बच्चों में एकाग्रता में कमी उच्च रक्तचाप और हृदय संबंधी समस्याएं और वन्यजीवों पर नकारात्मक प्रभाव खासतौर पर पक्षियों और जानवरों के संचार तंत्र पर असर देखा गया है। समुद्र का बढ़ता स्तर का मुख्य कारण ग्लेशियरों का पिघलना और समुद्र का गर्म होना समुद्र के जलस्तर में वृद्धि का कारण बन रहा है। तटीय शहर जैसे मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, न्यूयॉर्क, टोक्यो भविष्य में गंभीर खतरे में हैं। अनियमित वर्षा और सूखे से कृषि उत्पादन प्रभावित हो रहा है। गेहूं, चावल और दालों का उत्पादन कई देशों में घट रहा है। जैव विविधता में गिरावट से अनेक पौधे और पशु प्रजातियां विलुप्ति के कगार पर हैं। पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो रहा है।

–नरसिंहगढ़

कैसे रोकें पर्यावरण प्रदूषण?

सुधा शर्मा

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण भारत के लिए ही नहीं संपूर्ण विश्व के लिए एक चुनौती पूर्ण समस्या हो गई है। यह मानव जीवन के लिए अत्यधिक हानिकारक है। पर्यावरण का अर्थ हमारे चारों ओर का परिवेश है।

पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है परि+ आवरण। परि का अर्थ है चारों ओर और आवरण का अर्थ है ढका हुआ या घिरा हुआ अर्थात हमारे चारों ओर आसपास का वातावरण ही पर्यावरण कहलाता है । पर्यावरण के अन्य नाम है परिवेश या वातावरण और इसके अन्य समानार्थी शब्द पृष्ठभूमि, सेटिंग और परिस्थितिकी तंत्र भी हैं।

पर्यावरण में सजीव और निर्जीव सभी वस्तुएं सम्मिलित हैं जैसे कि सजीव घटक हैं मनुष्य जानवर पौधे सूक्ष्मजीव और निर्जीव घटक हैं हवा पानी मिट्टी सूर्य का प्रकाश चट्टान।

पर्यावरण के पांच तत्व होते हैं पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। ये तत्व हिंदू धर्म और पारंपरिक भारतीय दर्शन के अनुसार ब्रह्मांड और शरीर के निर्माण का आधार भी माने जाते हैं। इन्हें पंच महाभूत भी कहा जाता है - १. पृथ्वी- यह ठोस रूप में धरती और मिट्टी का प्रतिनिधित्व करती है। २. जल- यह नदियों झीलों और समुद्रों के रूप में पानी का प्रतीक है । ३. अग्नि- यह औज गर्मी और परिवर्तनकारी ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती है। ४. वायु-यह हवा और गैसों का रूप है जो सांस लेने के लिए आवश्यक है और ५. आकाश -यह खालीपन अंतरिक्ष का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें अन्य सभी तत्व मौजूद हैं।

इन्हीं पांचो तत्वों के अलग-अलग से पांच पांच विकृतियां हैं जिन्हें मिलाकर पांच -पांच विकृतियों बन जाती हैं जैसे कि पृथ्वी तत्व से मांस, हड्डी, त्वचा,रंध्र और नाखून । जल तत्व से लार, पसीना, खून, वीर्य, और मूत्र । अग्नि तत्व से भूख, प्यास, आलस्य, निद्रा और जंभाई । वायु तत्व से बोलना, सुनना, फैलना, सिकुड़ना और पता लगाना और आकाश तत्व से शब्द, रस, गंध, स्पर्श ।

प्रदूषण मानव का ही कृत्य नहीं है । ज्वालामुखी भी प्रदूषण उत्सर्जित करते हैं। जंगल की आग, ज्वालामुखी विस्फोट और धूल भरी आंधियां जैसे प्राकृतिक कारण भी प्रदूषण में योगदान करते हैं। हां यह निश्चित है कि मानव प्रजाति पर्यावरण प्रदूषण में भारी योगदान दे रही है और पिछली शताब्दियों में इसमें अधिक ही वृद्धि हुई है। सबसे पहले उन प्रदूषणों का अध्ययन किया गया जिनमें प्रदूषकों के भौतिक तत्व थे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और भूमि प्रदूषण । बाद में सदृश्य द्वारा ध्वनि प्रदूषण , प्रकाश प्रदूषण, तापीय प्रदूषण और विद्युत चुंबकीय प्रदूषण के लिए परिभाषाएं दी गई। इन मामलों में पर्यावरण में कोई भौतिक पदार्थ नहीं डाला जाता है लेकिन अमूर्त कारक जैसे विद्युत चुंबकीय तरंगे प्रकाश सहित या ध्वनि डाली जाती है । प्रायः विभिन्न प्रकार के प्रदूषण एक दूसरे के साथ परस्पर क्रिया करते हैं । वायुमंडल में कुछ प्रदूषण अम्लीय वर्षा के रूप में पृथ्वी पर वापस आ जाते हैं जिससे मिट्टी और महासागर दूषित हो जाते हैं।

मानव हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण को दो कारकों में विभाजित किया जा सकता है -नैसर्गिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण । यदि पूर्ण रूप से प्राकृतिक पर्यावरण जिसमें मानव हस्तक्षेप बिल्कुल भी ना हो या पूर्ण रूपेण मानव निर्मित पर्यावरण जिसमें सब कुछ मानव निर्मित हो कहीं नहीं पाए जाते । यह विभाजन प्राकृतिक प्रक्रियाओं और दशाओं में मानव हस्तक्षेप की मात्रा की अधिकता और न्यूनता का प्रतिनिधित्व करता है। पारिस्थितिक और पर्यावरण भूगोल में प्राकृतिक पर्यावरण शब्द का प्रयोग पर्यावास हैबिटेट के लिए भी होता है ।

पर्यावरण की उत्पत्ति पृथ्वी के गठन के साथ ही हुई है और इसमें भौतिक रासायनिक और जैविक कारकों का मिश्रण शामिल है इसका निर्माण विभिन्न घटकों के संयोजन से हुआ है जैसे कि वायु जल और भूमि जैसे भौतिक तत्व और फिर समय के साथ इसमें जीवन और मानवीय गतिविधियों के विकास से जटिलताएं जुड़ती गई हैं लेकिन तकनीकी मानव द्वारा आर्थिक उद्देश्य और जीवन में विलासिता के लक्षण की प्राप्ति के लिए प्रकृति के साथ बहुत अधिक छेड़छाड़ के कारण प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया है। और यह है प्राकृतिक व्यवस्था या प्रकृति प्रणाली के अस्तित्व पर ही संकट उत्पन्न हो गया है पर्यावरणीय समस्याएं जैसे कि प्रदूषण जलवायु परिवर्तन इत्यादि ।

पर्यावरण के चार मुख्य घटक हैं- स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल और जीव मंडल । स्थल मंडल में पृथ्वी की ठोस सतह

चट्टानें और मिट्टी शामिल है। जल मंडल में जल के सभी स्त्रोत नदी झील महासागर शामिल है । वायुमंडल में गैसों की पर्ते हैं और जीव मंडल में सभी जीवित जीव पौधे और जानवर आते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य प्रकारों में वायु, जल, मृदा, ध्वनि, तापीय प्रकाश और रेडियोधर्मी प्रदूषण सम्मिलित किए जाते हैं इन सभी का पर्यावरण और मानव के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है - १. वायु प्रदूषण - वाहनों उद्योगों और जीवाश्म ईंधन के जलने से हवा में हानिकारक गैस जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड और अन्य हानिकारक कणों का मिल जाना है। २. जल प्रदूषण- औद्योगिक अपशिष्ट, सीवेज, कृषि रसायन और अन्य प्रदूषकों का नदियों झीलों और महासागरों जैसे जल निकायों में मिल जाना है। ३. मृदा या पृथ्वी प्रदूषण- खेतों में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग, ई कचरा और अन्य ठोस अपशिष्ट का अनुचित निपटान जो मिट्टी को प्रभावित कर देता है। ४. ध्वनि प्रदूषण- वाहनों मशीनों निर्माण और अन्य मानव गतिविधियों से उत्पन्न होने वाला अत्यधिक और अवांछरीय शोर जो परेशानी और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं पैदा कर सकता है । ५. तापीय प्रदूषण- औद्योगिक प्रक्रियाओं से निकलने वाली गैस गर्म पानी को नदियों में छोड़ना इत्यादि से जलीय पारिस्थितिक तंत्र प्रभावित होता है । ६. प्रकाश प्रदूषण- शहरों में अत्यधिक कृत्रिम प्रकाश जो वन्य जीवों के प्राकृतिक चक्र को बाधित करता है । ७. रेडियो धर्मी प्रदूषण - परमाणु ऊर्जा संयंत्र और परीक्षणों से निकलने वाले रेडियोधर्मी पदार्थ जो बहुत खतरनाक होते हैं।

मनुष्य वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से अपने द्वारा किए गए परिवर्तनों से नुकसान को कितना कम करने में सक्षम है। आर्थिक और राजनीतिक हितों की टकराव में पर्यावरण पर कितना ध्यान दिया जा रहा है और मनुष्यता अपने पर्यावरण के प्रति कितनी जागरुक है? यह पर्यावरण प्रदूषण के ज्वलंत उदाहरण हैं। हमारे ग्रह का प्रदूषण सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है और इसका समाधान सबसे पहले होना चाहिए क्योंकि निष्कर्ष बताते हैं कि प्रदूषण ग्रह को, लोगों और उनके स्वास्थ्य, जानवरों और बहुत कुछ को प्रभावित करता है।

मानव के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए पर्यावरण संरक्षण अति आवश्यक है क्योंकि सभी को शुद्ध भोजन, स्वच्छ जल, दवाइयां और प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा मिलनी ही चाहिए । प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करना प्रदूषण को रोकना और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना जिससे वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए स्थाई भविष्य सुरक्षित किया जा सकता है। सभी मनुष्यों को जीने के लिए आवश्यक बुनियादी संसाधन जैसे शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, शुद्ध भोजन मिलना ही चाहिए । संरक्षण के प्रयास से जलवायु परिवर्तन के विनाशकारी प्रभाव को कम करने में मदद मिल सकती है।

पर्यावरण संरक्षण से जैव विविधता की भी रक्षा की जा सकती है क्योंकि पर्यावरण के कारण बहुत सी जातियां लुप्तप्राय प्रजातियां हो गई हैं लेकिन वातावरण के लिए सभी का अस्तित्व बचाना आवश्यक है । ईश्वर ने जितने भी जीव बनाए हैं वह प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। तो जैव विविधता की रक्षा करने के लिए पौधों और जानवरों की विभिन्न प्रजातियों के प्राकृतिक आवासों को संरक्षित करना भी आवश्यक है । पर्यावरण के लिए पानी, मिट्टी, हवा और जंगलों जैसे प्राकृतिक संसाधनों को स्थाई उपयोग को सुनिश्चित करना होता है। हम व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर पर्यावरण की रक्षा के लिए सरल कार्य कर सकते हैं । पेड़ हवा को साफ करते हैं कार्बन डाइऑक्साइड के स्तर को कम करते हैं और धरती को ठंडा रखते हैं इसलिए अधिक से अधिक पेड़ लगाए। शास्त्रों में कहा गया है कि पेड़ पुत्र के समान हैं । वेदों में तो यहां तक कहा गया है कि एक पेड़ सौ पुत्रों के समान है और उनकी रक्षा करना अति आवश्यक है। एक व्यक्ति को पूरे जीवन में सात पेड़ों की आवश्यकता होती है तो जितने व्यक्ति हैं उससे ७ गुना पेड़ होने चाहिए लेकिन आधुनिक युग में व्यक्तियों की संख्या ज्यादा है और पेड़ों की कम । शायद हमारे प्राचीन ऋषि मुनि पर्यावरण की अधिक जानकारी रखते थे और पर्यावरण के प्रति विशेष सजग और सचेत थे तभी तो उन्होंने पेड़ों को पुत्र के समान कहा है ।

उपाय- प्लास्टिक, कागज और कांच का उपयोग कम करें और जितनी प्लास्टिक कांच है उनका पुनः प्रयोग करें और पुनर्चक्रण करें । जल और बिजली की भी बचत करना अनिवार्य है। आवश्यकता अनुसार ही पानी और बिजली का उपयोग करें और उपयोग होने के बाद नल और लाइट बंद कर दें ।

वायु प्रदूषण देश के सामने बहुत बड़ी समस्या है अधिकतर देखा जाता है कि एक कार में कभी-कभी एक ही व्यक्ति सफर करता है । वायु प्रदूषण को रोकने के लिए निजी वाहनों का प्रयोग कम होना चाहिए। सार्वजनिक परिवहन, साइकिल या पैदल चलने की व्यवस्था की आदत भी होनी चाहिए । डिस्पोजल वस्तुओं के बजाय पुनः प्रयोज्य बैग, बोतल और कंटेनर का उपयोग होना चाहिए।

भारत सरकार ने पर्यावरण संरक्षण के लिए कई कानून और योजनाएं लागू की हैं जो निम्नलिखित हैं-

* पर्यावरण संरक्षण अधिनियम १९८६- यह अधिनियम केंद्र सरकार को पर्यावरण की गुणवत्ता की रक्षा और सुधार के लिए सभी आवश्यक उपाय करने का अधिकार देता है ।

* राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम - इसका उद्देश्य देश भर में पीएम १० और पीएम २.५ के स्तर को काम करके वायु प्रदूषण को मिटाना है।

* नवीनीकरण ऊर्जा को बढ़ावा- सरकार जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करने के लिए नवीनीकरण ऊर्जा स्त्रोतों जैसे सौर ऊर्जा को बढ़ावा दे रही है ।

* वन्य जीव संरक्षण अधिनियम - वनों और वन्य जीवों के संरक्षण के लिए अनेक कदम उठाए जा रहे हैं जैसे कि संरक्षित क्षेत्र की स्थापना करना और प्रोजेक्ट टाइगर , प्रोजेक्ट एलिफेंट जैसी विशेष परियोजनाएं लागू करना। -मेरठ

INDIA ART FESTIVAL

The biggest Art Fair network since 2011

INDIA ART FESTIVAL

04-06 APRIL 2025
KINGS CROWN CONVENTION
HYDERABAD

07-09 NOV 2025
CONSTITUTION CLUB OF INDIA
NEW DELHI

12-14 DEC 2025
PALACE GROUNDS, BENGALURU

30 JAN-01 FEB 2026
NEHRU CENTRE, MUMBAI

MUMBAI ART FAIR

10-12 OCT 2025
NEHRU CENTRE, MUMBAI

+91 8976044104, 8976044107, 8976044108

indiaartfestival@gmail.com, indiaartfestival2014@gmail.com
indiaartfestival2016@gmail.com, www.indiaartfestival.com

जे.के.स्टील फर्नीचर

भोपाल

जीवन मारण

स्वत्वाधिकारी संपर्क-9826422823

१. पेट्रोल पंप के सामने, चूना भट्टी, कोलार मुख्य मार्ग, २. सर्वधर्म कॉलोनी सी सेक्टर पुल समीप कोलार मुख्य मार्ग, ३. बरखेड़ी कलां मुख्य मार्ग, भोपाल

THE BEST MEDIA TO ENHANCE YOUR FOOTWEAR BUSINESS

Footbizz
Step into the Future of Footwear

SCAN THE QR CODE TO DOWNLOAD THE APP
For Apple
For Android

INDIA'S FIRST
B2B FOOTWEAR APP
THAT SOLVES EVERY
PROBLEM FACED BY
MANUFACTURERS
AND WHOLESALERS.

Combo Offer
@4000/-
DFMN + FOOTBIZZ
Get 1 Year Subscription
SOFT COPY
ALSO AVAILABLE

Book Your
Advertisement Today
& Promote Your Brand
in India & Abroad

DELHI FOOTWEAR MARKET NEWS ESTD. 1984
Footbizz Step into the Future of Footwear

DELHI FOOTWEAR MARKET NEWS
25, Central Market, Ashok Vihar, Phase-1, New Delhi -110052
Ph. : 011-47028361, Mob.: 9717730178, Email: dfmn22@gmail.com

RAM NIWAS & SONS
SRD STEELS (P) LTD.

SETH RAM NIWAS GUPTA
Chairman

SANJEEV GUPTA
Director

RAJEEV GUPTA
Director

DEEPAK GUPTA
Director

skgc

SHRI KRISHAN GRIT CO.
SKGC MINERALS LTD.

BRANCHES

Delhi • Mumbai • Bhopal • Bhilai • Ludhiana • Faridabad • Ahmedabad
Ghaziabad • Roorkee • Bangalore • Indore • Jaipur • Kanpur (U.P.)

Dr. Sanjeev Gupta (The Winner of)

- Global Business Icon Award - 2018
- Asia One-Global Indian of the Year 2018-19
- India's Greatest Brands 2018-19
- ARCH of Excellence Award
- Winner of National Award in 2021
- Meri Dilli Shresth Shree Sammaan - Nov. 2020
- ISI Mark from Bureau of Indian Standard - Dec. 2020
- Meri Dilli Shresth Shree Sammaan - Aug. 2022

स्वामी-मुद्रक-प्रकाशक-संपादक कैलाश श्रीवास्तव 'आदमी' द्वारा राघव भवन,गली क्र. 6/72 दयालपुर,दिल्ली 110090 से प्रकाशित,निर्दलीय प्रेस,भोपाल से मुद्रित।